वर्ष ४ अंक ३६-३८
अक्टूबर-दिसम्बर त्रैमासिक अंक

आर्ष क्रान्ति

वैदिक समाज व्यवस्था के लिए समर्पित

आर्य लेखक परिषद्

ओ३म्

आर्य लेखक परिषद् का मुख पत्र

आर्ष क्रान्ति

अक्टुबर–नवम्बर–दिसम्बर २०२१

वर्ष–४ अंक–३६–३८,
विक्रम संवत् २०७८
दयानान्दाब्द– १९७
कलि संवत् – ५१२३
सृष्टि संवत् –१,९६,०८,५३,१२२

प्रधान सम्पादक
वेदप्रिय शास्त्री
(७६६५७६५११३)

❖

सम्पादक
अखिलेश आर्येन्दु
(८१७८७१०३३४)

❖

सह सम्पादक
प्रांशु आर्य (कोटा)
(८७३९९७९६३०,
९९९३९७०९४०)

❖

आकल्पन
प्रवीण कुमार (महाराष्ट्र)

❖

सम्पादकीय कार्यालय
महर्षि दयानन्द आश्रम
ग्राम सिताबाडी, केलवाड़ा
जिला–बारां (राजस्थान)–३२५२१६

अनुक्रम

विषय

१. दिशा बोध (सम्पादकीय)
२. ग्लासगो जलवायु सम्मेलन
३. Follow Satyarth Prakash (Intro -1)
४. वेद क्रान्ति
५. अन्न की महत्ता और उपयोगिता दर्शाता...
६. जीवनीशक्ति व शरीर के नवनिर्माण...
७. अंधेरा क्यों भला मिटता नहीं (कविता)
८. अंग्रेजी की उपयोगिता और अनिवार्यता : एक विमर्श
९. महर्षि दयानन्द की विलक्षणता
१०. धर्म निरपेक्ष राज्य वर्ण/जाति विहीन हिन्दू जाति
११. रत्न आर्य समाज के (कविता)
१२. आर्यसमाज के महाधन स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
१३. साम्प्रदायिक सद्भाव, स्वाभिमान व स्वधर्म के रक्षक स्वामी श्रद्धानंद
१४. विकास–पथ या विनाश–पथ ?
१५. दयानन्द का अर्थ तो..
१६. सक्रियता : जीवनीशक्ति है और सफलता का...

ईमेल – aryalekhakparishad@gmail.com
वेबसाइट – https://aryalekhakparishad.com/
फेसबुक – आर्य लेखक परिषद्

Digital

सम्पादकीय

दिशा बोध

गतांक से आगे

महर्षि को यह विश्वास था कि हिन्दुओं का कभी कोई समाज नहीं बन सकता। वास्तव में हिन्दू न तो कोई धर्म है और न कोई जाति है क्योंकि अब तक यह निर्णय करना मुश्किल है कि हिन्दू कौन है? हिन्दुओं का कभी कोई समाज नहीं रहा और आगे भी नहीं बनेगा। यह सत्य है, चाहे कोई विश्वास करे या न करे। यहाँ जब भी कोई समाज था तो वह आर्य समाज ही था और भविष्य में भी कोई होगा तो वह आर्य समाज ही होगा। यह दुर्भाग्य की बात है कि प्राचीन आर्य जाति हिन्दू का रूप धारण करके शनैः–शनैः अपना अस्तित्व खो रही है और दीन हीन जीवन जीने को विवश है। आज सिक्ख, बौद्ध, जैन, हरिजन, आदिवासी तथा अन्य अनेक सम्प्रदाय अपने को हिन्दुओं से भिन्न मानते हैं और हम से कट–कट कर अलग होते जा रहे हैं और हम –

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था।
जिन्हें इस देश और जाति का बेड़ा पार करना था।
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें दुनिया में वैदिक धर्म का प्रचार करना था।
उन्हें देखो तो बाहम बर सरे पैकार बैठे हैं।
वजूद अपना मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।।

इसलिए मित्रों अभी आर्य समाज बना नहीं हम सबको बनाना है। पर इससे पूर्व कि मैं समाज निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन करूं, आर्य समाज के निर्माण में जिन बाधक तत्वों ने योजना बद्ध प्रहार करके इसे विघटित किया उन पाखण्डियों की पहचान आपको कराता चलूँ, क्योंकि शत्रु जब शत्रु वेश में सामने आता है तब इतना भयकर नहीं होता जितना मित्र बनकर आने पर। ये तत्व भी हमारे अपने बनकर घुसे हुए हैं। इन्होंने आर्य समाज का जनाजा निकाल दिया है। आज आर्य समाज के पतन पर आँसू तो सभी बहा रहे हैं किन्तु यह जानने का प्रयास नहीं करते कि इसे मारा किसने ? एक शायर के शब्दों में –

"रो रहे हैं यार मेरी लाश पर बे अख्तियार।
यह नहीं दरियाफ्त करते किसने इसकी जान ली।।"

मित्रों! आइए पता करें कि आर्य समाज के पतन में किन तत्वों का हाथ है। महर्षि दयानन्द ने जिस पाखण्ड दुर्ग के ढहाने के लिए अपनी शक्ति लगाई थी उसकी रक्षा में तत्पर लोगों ने जब देखा कि सीधी लड़ाई में हम मात खा जाएंगे तो उन्होंने अपनी रणनीति बदल दी। महर्षि दयानन्द तो इनकी सम्भावनाओं से परिचित थे, इनकी चालों से अवगत थे, किन्तु उनके पश्चात् आर्य लोग इनकी रणनीति के शिकार होकर बुरी तरह पिट गए। कौन थे ये लोग ? दुनिया का पूञ्जीपति और पुरोहित वर्ग ही था जो परस्पर मिलकर धर्म के नाम पर एक ऐसी व्यवस्था या आचार संहिता बनाए हुए था, जिससे मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त ही नहीं अपितु उसके पश्चात् भी पीढ़ी दर पीढ़ी उस धार्मिक आचार का पालन करने के चक्कर में अपनी जन्म भर की कमाई गवा देते थे, घोर परिश्रम के पश्चात् भी दो जून की रोटी, लाज ढकने को वस्त्रादि नहीं जुटा पाते थे। इस प्रकार पुरोहित व पूञ्जीपति वर्ग संसार के लोगों के श्रम का शोषण करता था और इन्हीं की राज्य व्यवस्था चलती थी। बड़ी ताकते या बड़े वर्ग छोटे वर्ग के लोगों के शोषण के लिए अपने दलाल नियुक्त करते थे और इस प्रकार कुछ जालिम दुनियाँ के मजलूमों को दास बनाए हुए थे। महर्षि दयानन्द ने इनकी पोल खोली और इनके विरुद्ध लड़ने को ललकारा। किन्तु दुर्भाग्य था कि पाखण्डी ताकतों के आगे उसे अपना बलिदान देना पड़ा। पश्चात् आर्यों ने इस रहस्य को नहीं पहचाना, वे विदेशी पाखण्डीयों से तो लड़ते रहे किन्तु घर के जालिमों को अपना भाई, अपना खून, अपना जाति का समझ कर उनके हाथों परास्त हो गए।

स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम से अङ्ग्रेज सरकार यह समझ गई थी कि यदि यह आन्दोलन सफल हो गया और राज्य शासन आर्यों के हाथ में चला गया तो हमारे शोषण के रास्ते सदा के लिए बन्द हो जाएंगे और बहुत सम्भव है कि दयानन्द की योजनानुसार आर्य लोग अपना चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित कर लेवें। फलतः उन्होंने इस बात का पूर्ण प्रयास किया कि जैसे भी हो आर्य समाज किसी प्रकार भी सक्रिय राजनीति में भाग न ले सके। इसके लिए उन्होंने दो प्रकार से

आक्रमण किया। एक तो जो आर्य समाजी राजनीति में सक्रिय थे या वैसी रुचि रखते थे उन्हें सताना शुरू किया और दूसरी ओर आर्य समाज में सरकार परस्त लोगों को भर दिया जो प्रारम्भ में खूब दयानन्द की जय बोलते रहे और फिर मन्त्री प्रधान बन जाने पर सक्रिय राजनीति में भाग लेने वाले लोगों को आर्य समाज की सदस्यता से ही बाहर निकाल दिया और इस बात की घोषणा की कि आर्य समाज मात्र एक धार्मिक सङ्गठन है। इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। इस प्रकार एक समय ऐसा आया जब आर्य समाजी नेतृत्व सरकार परस्त लोगों के हाथों में पूरी तरह चला गया और उपरोक्त घोषणा करके इन्होंने स्वामी दयानन्द की तरह आर्य समाज को भी जहर पिला दिया।

परिणाम स्पष्ट था स्वतन्त्रता के पश्चात् राज्य शासन उन लोगों के हाथ में गया जो पूञ्जीवादी मनोवृत्ति के थे और भारतीय संस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ, तात्पर्य यह है कि पाखण्ड के शिकंजे से देशमुक्त नहीं हो पाया किन्तु फिर भी पाखण्डी ताकतें जानती थी कि आर्य समाज का आन्दोलन सक्रिय रहना हमारे लिए भविष्य में खतरा पैदा कर सकता है। अतः उन्होंने ऐसी चाल चली कि इसे समूल नष्ट कर दिया जाए। उन्होंने देखा कि स्वामी दयानन्द हिन्दुओं को आर्य बनाना चाहते थे और यदि हिन्दू आर्य बन गए तो शोषण के और कौम को कमजोर करने के हथियार निष्फल हो जाएंगे। इस प्रकार यह कौम सशक्त होकर हमारे विरुद्ध संघर्ष खड़ा कर देगी। क्योंकि जब तक कोई हिन्दू बना रहता है तो वहाँ सारी बुराइयाँ प्रविष्ट हो जाने का रास्ता बना रहता है। उदाहरण के लिए वहाँ ईसाई मुसलमान भी अपना कार्य कर सकते हैं। गांजा, भाङ्ग, शराब, अफीम, वेश्याएं तथा अन्य पतनकारी साधन सुलभ हैं। धर्म के नाम पर शोषण की पूर्ण सुविधा है। मत मतान्तर चलाने वाले गुरु बनकर, भगवान् बन कौम को तोड़ने और अपना उल्लू सीधा करने की भी गुंजाइश है। ऐसी स्थिति में हिन्दू युवा शक्ति कायर, नपुंसक, चरित्रहीन और बुद्धिहीन होगी। फलतः हिन्दुओं का कभी कोई सामाजिक सङ्गठन नहीं बन सकता।

परन्तु आर्य बन जाने पर सारी बुराइयाँ, रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ नष्ट हो जाएंगी। चरित्र, सदाचार, संस्कृति का ज्ञान, वीरता व संघर्ष की क्षमता पैदा हो जाएगी। किसी प्रकार के पाखण्ड को पनपने की गुंजाइश न होगी। हर आर्य अपने घर के तथा बाहर के समस्त पाखण्डियों से लड़ने को समुद्यत रहेगा और एकता के सूत्र में बन्धकर सङ्गठित होकर विरोधी शक्ति के सामने सीना तानकर खड़ा हो जाएगा। फलतः पाखण्डी ताकतों ने शत्रु को उसके घर में घुसकर पछाड़ने का निश्चय किया और आर्य समाज की प्रजातन्त्र प्रणाली का लाभ लेकर उसमें घुस गए। पैसे के बल पर मन्त्री प्रधान बनकर समाज की चल अचल सम्पत्ति पर कब्जा कर फिर अपना बहुमत बनाकर आर्य समाज के आन्दोलनात्मक कार्यों को ठप्प कर दिया और उसे सम्प्रदाय जैसा बना दिया। आज यही लोग आर्य समाज के नेता हैं जो इसकी अस्मत को अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए नीलाम कर रहे हैं।

दूसरी तरफ आर्य समाज के समानान्तर सङ्गठन खड़ा किया गया। स्वामी दयानन्द के स्थान पर विवेकानन्द, आर्य समाज के स्थान पर हिन्दू सभा या विश्व हिन्दू परिषद, आर्य वीर दल के स्थान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नमस्ते की जगह नमस्कार और वैदिक आर्य राष्ट्र के स्थान पर संकीर्ण हिन्दू राज्य की कल्पना इत्यादि।

आर्य समाज जो शोषित और दलित वर्ग का अगुआ था उसे सब को शुद्ध करके गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था स्थापित करके अपने सङ्गठन को सुदृढ़ करना था। किन्तु हिन्दू रक्षा के चक्कर में वह अपना अस्तित्व खो बैठा। परिणाम यह हुआ कि जो ईसाई, मुसलमान शुद्ध हो कर आर्य बने उनके साथ किसी ने रोटी–बेटी का सम्बन्ध नहीं किया और वे जैसे आए वैसे वापस चले गये। जो लोग भङ्गी, चमारादि में से ईसाई मुसलमान बन गए थे उन्हें फिर शुद्ध करके भङ्गी, चमार ही बनाने का उद्योग होता रहा। उनके उस भङ्गीपने या चमारपने को दूर करने का कोई यत्न नहीं हो सका और वे पुनः बौद्धादि हो गए तथा उनके टूटने की सम्भावना सदा बनी ही रहेगी।

इसका एक और घातक परिणाम यह हुआ कि नीची जाति व पिछड़ी जाति के लोगों ने समझा कि आर्य समाज सवर्ण हिन्दुओं के थैले का ही चट्टा–बट्टा है। इसके पास बातें ही बातें हैं, व्यवहार में कुछ नहीं।

फलतः वे आर्य समाज छोड़ गए और समाज के मन्त्री, प्रधानों के पुत्र आर. एस. एस में जाने लगे। अब आर्य समाज में कौन आवे। लोग कहने लगे कि आर्य समाज में युवा शक्ति नहीं आती उसके पास कोई कार्यक्रम ही नहीं है। परन्तु मैं कहता हूँ कि किसी समाज में नई पीढ़ी नहीं मिल रही है इसके दो ही कारण हो सकते हैं कि या तो वह समाज नपुंसक है सन्तानोत्पत्ति की क्षमता ही नहीं या उसकी सन्तान कोई अन्य जन्तु उठा ले जाते हैं। आज समय है इस पर गम्भीरता से विचार करने का। आज आर्य समाज में राजनीतिक भेड़िए अपने अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं। वास्तविक आर्य समाजी तो आर्य समाज में जाते ही नहीं, इस प्रकार आर्य समाज को बदनाम किया जा रहा है कि वह झगड़ालू है। परन्तु लोगों को यह पता नहीं कि आर्य समाज तो घायल पड़ा मौत की घड़ियाँ गिन रहा है। मित्रो! यदि आर्य समाज का अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो न हिन्दू रक्षा ही हो सकेगी न आर्य राष्ट्र बन सकेगा, न वर्णाश्रम व्यवस्था कायम हो सकेगी। इसलिए उपर्युक्त पाखण्डी तत्वों से आर्य समाज को बचाने की वर्तमान में पहली महती आवश्यकता है। बड़े दुख की बात है कि जब आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होकर उसकी सेना में भर्ती होते हैं तो सबसे पहले माँ–बाप से वैचारिक संघर्ष करना पड़ता है। उनकी आस्थाओं पर पानी फेर कर, आज्ञा को ठुकरा कर हम घर बार और सम्पत्ति का उत्तराधिकार तक छोड़ने को उद्यत हो जाते हैं, छोड़ देते हैं। फिर जाति बिरादरी, पास, पड़ोस वालों की घृणा, उपेक्षा और दुर्व्यवहार को सहन करते हुए भी अडिग रहते हैं। किन्तु जब युद्ध के मैदान में आते हैं तो पता चलता है कि हम तो नपुंसकों, देशद्रोहीयों और गद्दारों की सेना में आ गये, जो हमें विजय मार्ग की ओर बढ़ने में सहयोग के स्थान पर निरन्तर हतोत्साहित करते हैं। सज्जनों! उस समय मन में कैसी निराशा, घुटन और विद्रोह पैदा होता है, इसको एक सच्चा आर्यवीर ही जान सकता है। यह बात अच्छी तरह हृदयंगम् कर लेनी चाहिए कि आज विश्व में जो दो बड़ी ताकते हैं एक कम्युनिस्ट और दूसरी कैपिटलिस्ट। इन दोनों में आर्य समाज को हानि पहुँचाने वाली कैपिटलिस्ट शक्ति ही है। आर्य समाज आस्तिक और धर्म प्रधान समाज था। अतः कोई कम्युनिस्ट इसका सदस्य बनने की इच्छा ही नहीं कर सकता था। इसमें घुसे तो पूञ्जीवादी भेड़िए ही घुसे। इन्होंने आर्य वीर दल को कुचलकर आर्य समाज को हिन्दुत्व के दलदल में विलीन कर दिया। आज हिन्दू कहलाने वाली कौम की बोटियाँ कटने के साथ–साथ इस देश के भी टुकड़े होते जा रहे हैं। यह हिन्दू कौम और यह देश तभी अखण्ड रहेगा जब हिन्दू से आर्य और हिन्दुस्तान से आर्यवर्त्त बनेगा। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। हिन्दू लोग इन पूञ्जीवादी भेड़ियों से सावधान होकर आर्य समाज में दीक्षित हो जाएं इसी में इनका कल्याण है।

पूञ्जीवादी भेड़िए एक ओर साधु संन्यासी और भगवान् बनकर सर्वधर्म समन्वय, भाग्यवाद, भूत, प्रेत, देवी, देवता, फलित ज्योतिष आदि का प्रचार चल चित्रों और पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से करके देशस्थ लोगों की मानसिकता को सङ्गठित नहीं होने देते। दूसरी ओर हिन्दू संस्कृति सभ्यता की रक्षा की दुहाई देते हैं। एक ओर लोगों की काम (सेक्स) सम्बन्धी कमजोरी का लाभ उठाकर चल चित्रों और पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से स्त्रियों के नङ्गे चित्र छाप कर सौन्दर्य प्रसाधन और वस्तुओं के विज्ञापन छपवा कर तथा दिनभर अश्लील बेहूदा गाने बजवा कर जमकर शोषण कर रहे हैं। दूसरी ओर चरित्र के लुटने का राग अलापते हैं। वस्तुतः यह लोग मानव समूह के धन और धर्म दोनों को ही बड़ी बेरहमी से लूट रहे हैं। आर्य वीरों को इनकी पहचान अच्छी तरह कर लेनी चाहिए।

भावी रणनीति और हमारा कर्त्तव्य –

यहाँ तक हमने पाखण्ड की उत्पत्ति पाखण्डियों की पहचान के बारे में विस्तार से चर्चा की है तथा इन्होंने आर्य समाज को कैसे निष्क्रिय बना दिया यह भी यथामति समझाने का प्रयास किया है। अब हम अपने भावी कार्यक्रम और रणनीति का निर्धारण किस प्रकार करें ? इस सम्बन्ध में कुछ चर्चा करते हैं।

सर्वप्रथम कोई भी सङ्गठन तब सुदृढ़ होता है जब उसके कार्यकर्त्ता सङ्गठन के सिद्धान्तों और उनके ऊपर बनी आचार संहिता के प्रति निष्ठावान हों, समर्पित व्यक्तित्व के साथ–साथ किसी प्रकार के प्रलोभन में फंसकर पथभ्रष्ट न होने वाले हों। सङ्गठन की गोपनीयता तथा नेतृत्व के प्रति वफादार

हों। नेतृवर्ग भी जुझारू और आदर्श उपस्थित करने वाला होना चाहिए। वेद में एक मन्त्र में कहा गया है कि ''इस प्रकार के समान विचार वाले और समान ख्याति वाले लोगों को इकट्ठा करो और सनीड बन जाओ अर्थात् एक परिवार के रूप में सङ्गठित होकर सङ्गठन रूपी अग्नि का संवर्धन करो और प्रगतिशील होकर ऐश्वर्य का उपार्जन करो।'' अतः हमें सर्वप्रथम उन लोगों को इकट्ठा करना है जो हमारे समान विचारों के हैं और हमारे जैसी ख्याति के हैं। फिर जाति मोह और रक्त सम्बन्ध के मोह को निर्ममता पूर्वक छोड़कर अपने विचार वाले लोगों के साथ पारिवारिक सम्बन्ध सुदृढ़ करें अर्थात् वैवाहिक सम्बन्ध से लेकर संस्कारोत्सव, मेल–मिलाप, सुख दुख में सहभागी होना, संकट में सहयोग तक आर्यों का पारस्परिक हो। यह प्रथम करणीय कर्म है तत्पश्चात् प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि नित्यकर्म (संध्या यज्ञादि) तथा संस्कारों को परिवार में विधिवत सम्पादित करे। संयम का दृढ़ता से पालन करे और समाज में अपने चरित्र बल और सत्यनिष्ठा के बल से एक विशेष स्थान बनाए। अपनी संतान को संस्कारित करके वैदिक विचारधारा का बनावें। यदि प्रयत्न करने पर भी वह अनार्य निकले तो निर्ममता पूर्वक उसको सभी दायभागों से वञ्चित करके समाज से बहिष्कृत कर दें। निःसन्देह यह बड़ा विकट कार्य है किन्तु यह करना ही होगा। कैसी विडम्बना है कि ईसाई का बेटा ईसाई, मुसलमान का बेटा मुसलमान, सिक्ख का बेटा सिक्ख है किन्तु आर्य का पुत्र आर्य नहीं है, यह गम्भीरता पूर्वक विचार करने की बात है। इसके पश्चात् आर्यों को अनाज व फलों की खेती योग्य भूमि जितनी हो सके अधिकृत करनी चाहिए। जीवन के लिए आवश्यक पदार्थ जैसे भोजन, वस्त्र, दवाई, साबुन, तेल, जूते इत्यादि के उद्योग और व्यापार पर प्रभुत्व प्राप्त किया जाए और आत्मनिर्भर बना जाए। कोई भी आर्य संतान बेरोजगार बेकार और निर्धन नहीं होनी चाहिए। हमें इतना सक्षम होना आवश्यक है कि हम उसे किसी व्यापार, उद्योग या सेवा कार्य में लगा सकें। आर्य परिवारों के प्रत्येक व्यक्ति को संवारना और उसे उपयुक्त स्थान में नियुक्त कर समाजोपयोगी बनाना हमारा महत्वपूर्ण सामायिक कर्त्तव्य है। इस प्रकार आर्य समाज की प्रत्येक इकाई आर्थिक रूप से पूर्णतया समृद्ध होनी चाहिए।

प्रचार कार्य –

प्रचार कार्य को पेशा या जीविकोपार्जन का माध्यम बनाने से कभी भी सफलता नहीं मिल सकती। इन व्यवसायी टका लोभी और वेश्या धर्मी प्रचारकों, उपदेशकों से आर्य समाज के प्रचार कार्य को बड़ा धक्का लगा है। दक्षिणा लोभी पण्डितम्मन्य धूर्तों के द्वारा पञ्च कुण्डी, सप्तकुण्डी, शत और सहस्र कुण्डी तथा अन्य प्रकार के मूर्खतापूर्ण यज्ञ कराने और वेद कथा के नाम पर तोता मैना की कहानी और चुटकुले सुनाकर लोगों का मनोरञ्जन करने को ही आर्य समाज का प्रचार मान लिया गया है। वस्तुतः आर्य समाज में भी पाखण्डी पण्डों का बाहुल्य हो गया है। इनसे भी प्रचार कार्य में बाधा पहुँची है। आवश्यकता इस बात की है कि वेद के द्वारा ही वेद का अर्थ किया जाए तथा व्याकरण निरुक्तादि अङ्गोपाङ्गो के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसन्धान किया जाए। ब्राह्मण काल में श्रौत यागों के विकृत हुए स्वरूप को परिष्कृत किया जाए और उन्हें विधिवत सम्पादित कर उनका फल प्राप्त किया जाए। वेद प्रचार में इसी प्रकार के खोजपूर्ण प्रवचन होने चाहिए और इस दिशा में परिश्रम करने वाले पण्डितों को सब प्रकार के साधन सम्पन्न रखकर सम्मानित करना चाहिए। प्रचार का प्रकार भोंडा, परुष और कटु न होकर हृदयग्राही एवं श्रोताओं द्वारा ही अपनी बात की पुष्टि कराते चलने वाला होना चाहिए।

जब तक हम एक विशाल एवं सुदृढ़ समाज का निर्माण न करले तब तक बौद्ध भिक्षुओं के समान जवानी के सुखों को लात मारकर अक्खड़ संयमी जीवन को निष्ठा से स्वीकार करके मात्र भोजन वस्त्रादि पर निर्वाह करने वाले त्यागी, तपस्वी असंख्य विद्वान् प्रचारकों की आवश्यकता है। गृहस्थ प्रचारक भी जहाँ तक सम्भव हो अपनी जीविका का प्रबन्ध करके जितना समय सरलता पूर्वक दे सके देकर प्रचार करें अथवा समाज से कम से कम लेकर निर्वाह मात्र करते संग्रह वृति छोड़कर प्रचार करें और समाज इन गृहस्थी प्रचारकों की संतानों की शिक्षा व विवाहादि का प्रबन्ध करें। प्रचार कार्य किसी प्रकार भी धनोपार्जन हेतु व्यवसाय न बनना चाहिए। सभी प्रचारक स्वेच्छा से स्वयं की श्रद्धा से ऋषि ऋण

चुकाने की भावना से संघर्षों में जूझकर कार्य करने वाले हों। अपना कर्त्तव्य समझकर कार्य करें न कि यह समझ कर कि हम किसी पर एहसान कर रहे हैं। अतः बदले में हमें पुरस्कार मिलना चाहिए। सबसे अधिक प्रभावी प्रचार संन्यासियों द्वारा होता है किन्तु वे यथार्थ में संन्यासी होने चाहिए। आज आर्य समाज में निस्पृह, विरक्त निष्पक्ष, विद्वान्, त्यागी, ईश्वर विश्वासी, परिव्रजनशील, भिक्षाभोजी, सत्यवक्ता और सौम्य स्वभाव योगरत यत्तियों का अभाव है। अपवाद रूप में कुछ एक को छोड़कर प्रायः लोभी, संग्रही पक्षपाती, क्रोधी, मूर्ख, असत्यभाषी, ईश्वर विश्वास और उपासना क्रिया योगादि से शून्य भोजन भट्ट सरस्वतियों का बाहुल्य है जो अपना टिमटिमाता दिया वहीं लिए घूमा करते हैं जहाँ पहले से ही हजार वाट का बल्ब जल रहा होता है। कुछ संन्यासी तो पूञ्जीपति हैं जो ऐशो आराम के सामान इकट्ठा किए विलासिता का जीवन जीते हैं, ब्याज पर रुपया उठाते हैं, अपनी पत्नी और भाई भतीजों का उदर पोषण करते हैं। अब विचारिये है कि गाँव–गाँव गली–गली झुग्गी झोपड़ियों में आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रकाश कैसे पहुँचे, कौन पहुँचाएगा ?

आज जिसको देखो वही कपड़े रंग लेता है कोई पात्रता की परख नहीं होती, कोई अनुशासन नहीं होता। अतः भविष्य में योग्य संन्यासियों का उत्पादन अत्यावश्यक है। यह सभी प्रकार की क्षतिपूर्ति आर्य वीर दल के माध्यम से ही सरलता पूर्वक हो सकती है अन्य कोई उपाय नहीं है। अतः आर्य वीर दल को सशक्त प्रभावी और गतिशील किया जाए। आर्य वीर दल ऊपर बताए गए शत्रुओं का दमन करके आर्य समाज और आर्य राष्ट्र का निर्माण करें।

आर्य वीर दल की कार्य प्रणाली –

बीज वही डाला जाता है जहाँ वह सरलता से उगकर वृक्षाकार होकर शीघ्र फल देने लगे। यदि भूमि अच्छी नहीं है तो वहाँ बीज डालने से बीज के भी नष्ट हो जाने की और परिश्रम के व्यर्थ जाने की पूरी सम्भावना रहती है। हाँ कभी–कभी ऐसा भी होता है कि यदि भूमि थोड़ी खराब भी हो तो उसे किञ्चित परिश्रम करके उर्वर बनाया जा सकता है। बस इसी बात को ध्यान में रखकर हम आर्यवीर दल का कार्य प्रारम्भ करें। हम देखें कि हमारे प्रान्त में कहाँ–कहाँ आर्य वीर दल शीघ्रता से पनप सकता है।

जिस स्थान पर सरलता और शीघ्रता से कार्य पनप सके वहीं से हमारा प्रारम्भ होना चाहिए। कार्य करने में इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि वह पास से दूर की ओर, सरल से कठिन की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलने वाले क्रम में व्यवस्थित हों। हमने जहाँ से अपना कार्य प्रारम्भ किया है वहीं से आसपास फैलाने का प्रयास करें। इसी प्रकार सामान्य व्यायाम से क्रमशः विशाल शक्ति सञ्चय की ओर तथा सामान्य ज्ञान से शनैः शनैः वृहद् विज्ञान की ओर बढ़ें। यहाँ तक कि इस भौतिक जगत् के रहस्यों को समझते हुए अध्यात्म की असीम गहराई की ओर बढ़ते जाएं। तभी हम शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करने में सफल होंगे। इसके लिए एक बड़ी योजना बनानी चाहिए फिर उसके चरणों का विभाजन होना चाहिए। फिर क्रमशः एक–एक चरण को पूरा करना चाहिए जहाँ असफल हों वहां असफलता के कारणों की सूक्ष्म जांच होनी चाहिए।

एतदर्थ एक प्रशासक समिति नियुक्त हो जिसमें अनुभवी परामर्श देने वाले लोग हों, साथ ही शासनात्मक क्षमता भी हो जो वीर, लोभ रहित और समय को पहचान कर कार्य करने में प्रत्युतपन्न मति वाले हों, इत्यादि।

यह प्रशासक समिति समस्त कार्यों को वर्गीकृत कर के प्रत्येक कार्य के अनुरूप योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करें। उदाहरण के लिए प्रचार विभाग, बौद्धिक प्रशिक्षण विभाग, व्यायाम प्रशिक्षण विभाग, लेखन प्रकाशन विभाग, न्याय विभाग, पत्राचार विभाग, पुस्तक वितरण विभाग, योग प्रशिक्षण विभाग और सुरक्षा विभागादि। उपर्युक्त इन्हीं विभागों के अनुसार जब हम शिविर लगाएं तो उन में आने वाले आर्य वीरों की प्रतिभाओं को छांटा जाए और जो जिस योग्य हो, जिधर जिसकी रूचि हो उसे उधर की ओर बढ़ने के सभी साधन उपलब्ध कराकर दक्ष बना दें पश्चात् यथा स्थान नियुक्त करें। ध्यान रहे कि नवयुवक कार्य चाहता है। अतः हमारा प्रयास हो की वर्ष भर के लिए प्रत्येक आर्यवीर के करने के लिए कार्यभार सौंपें जिससे वह कहीं भी रहकर न्यूनतम दो घण्टे आर्य वीर दल व आर्य समाज का कार्य करता रहे। इस प्रकार प्रत्येक विभाग अपनी मासिक और वार्षिक प्रगति का मानचित्र, बाधाओं और उसके निराकरण का

विवरण और अपने अनुभव तथा सुझाव प्रस्तुत करे। हम आर्य वीर दल के माध्यम से ऐसा प्रयास करें कि हमारा आर्यवीर सर्वत्र अपने चरित्र और ईमानदारी की छाप छोड़े और कालान्तर में सरकारी, अर्द्ध सरकारी या अन्य कोई ऐसा विभाग व व्यापार क्षेत्र शेष न रहे जहाँ हमारा आर्यवीर न हो। जब सर्वत्र सेवा कार्यों में हमारे आर्य वीरों की मांग बढ़ जाए, यहाँ तक कि राष्ट्र और समाज का कोई कार्य आर्य वीर दल के सहयोग के बिना पूर्ण न हो सके हमें ऐसी परिस्थिति का निर्माण करने की आवश्यकता है।

इस महान् उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमें गुण्डों और असामाजिक तत्वों तथा राजनीतिक भेड़ियों से निपटने की क्षमता के साथ–साथ प्राचीनतम तथा आधुनिकतम संस्कृतियों, राजनैतिक परिस्थितियों एवं वैज्ञानिक प्रगतियों की व्यापक जानकारी की क्षमता होनी चाहिए। प्रत्येक आर्यवीर का, प्रत्येक ऋषि भक्त का कर्त्तव्य है कि विचार करे कि जो आर्य समाज कभी इतने तेजस्वी रूप में था कि देश विदेश के लोगों को एक प्रचण्ड पाप नाशक अग्नि पुञ्ज दिख रहा था और संसार में मानवता की रक्षा करके सुख शान्ति का ईश्वरीय साम्राज्य स्थापित होते देखने की आशा से सब की दृष्टि आर्य समाज पर केन्द्रित थी वह आज इतना निस्तेज और भस्मसात् होकर रह गया है कि उसकी ओर कोई देखता ही नहीं, उससे कोई आशा ही नहीं और कुछ भी प्यार नहीं। पहले कभी देश व कौम की समस्याओं, आपातकालीन स्थिति में अथवा अन्य किन्हीं रचनात्मक कार्यों में आर्य समाज के नेताओं की प्रमुख भूमिका होती थी। बिना उसके परामर्श के कोई कार्य नहीं हो सकता था। किन्तु आज समाज व देश के छोटे–मोटे सुधार कार्यों में भी उसका नेतृत्व नहीं रहा। कभी पाखण्डी, पापी और समाज कष्टक लोग आर्य समाज से भयभीत रहते थे और एक सामान्य आर्य की उपस्थिति का आभास पाते ही वहाँ से ऐसे भागते थे जैसे वहाँ कभी थे ही नहीं। परन्तु आज वे उसकी कोई परवाह न कर के चारों ओर सिर ऊंचा किये दनदना रहे हैं।

आज आर्य समाज जागृति व चेतना का तेज पुञ्ज न रहकर निस्तेज, निवीर्य और प्राण हीन बन गया है। कभी मन, वचन और कर्म की एकता तथा सत्य के लिए आर्य समाज की ख्याति थी। आज वह असत्य व्यवहार और छल छद्म का अड्डा माना जाता है। कहाँ तक कहे संसार को आर्य बनाकर सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की स्थापना और वैदिक धर्म की विजय वैजयन्ती विश्व में फहराने का उन्नत उद्देश्य लेकर चलने वाला एक विशाल और सशक्त आन्दोलन आज दादू पन्थ, कबीर पन्थ तथा अन्य सहस्रों मत मतान्तरों की श्रेणी में बण्डल बना पड़ा है। आज इसका उपयोग इसके उद्देश्यों के अनुरूप न होकर आर.एस.एस, भाजपा और कांग्रेस आदि के उद्देश्यों के अनुरूप होने लगा है और विद्वान्, त्यागी, बलिदानी वीरों का सङ्गठन आज एम.एल.ए और एम.पी पद के लोभी राजनैतिक चौधरियों की चौधराहट का अखाड़ा बनकर रह गया है। इन सब का क्या कारण है ? क्यों आर्य समाज अपना अस्तित्व खो कर अन्तिम घड़ियाँ गिनता सा प्रतीत हो रहा है ? क्या इसके लिए कुछ किया जा सकता है ? बताएँ अब क्या किया जाय ?

आर्यों! अब लाठी–पत्थर और चिट्ठी–पत्री तथा वाद विवाद का युग समाप्त हो गया है। वैज्ञानिक यन्त्रों के माध्यम से परिष्कृत एवं प्रभावी ढङ्ग से पाखण्ड का प्रचार प्रबल वेग से हो रहा है। ऐसी परिस्थिति को ध्यान में रखकर ही तुम्हें अपनी सुरक्षा और प्रचार हेतु सनद्ध होना पड़ेगा। भावी समय अति सङ्कट पूर्ण है। सावधान रहें। जब पानी सर पर होकर गुजर जाएगा फिर चेतने से कोई लाभ नहीं। अपने अस्तित्व को बचाओ। इत्यलम्

सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः।

– ✍ वेदप्रिय शास्त्री

मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्।

(अथर्व० ६.३२.३)

आपस में लड़ने वाले (परिवार व राष्ट्र) मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

ग्लासगो जलवायु सम्मेलन : सहमतियां, असहमतियां और समझौते

— ✍ अखिलेश आर्येन्दु

स्कॉटलैंड के ग्लासगो शहर में 31 अक्टूबर से 14 नवम्बर 2021 तक आयोजित होने वाला संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन सहमतियों, असहमतियों और समझौतों के साथ सम्पन्न हो गया। तमाम सहमतियों और असहमतियों के बीच देशों के बीच ऐसे समझौते भी हुए हैं जिनसे कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जा सकेगी। उन उपायों पर आम सहमति होने की उम्मीद थी जिनसे वायुमंडल का औसत तापमान औद्योगिक युग से पहले के औसत तापमान की तुलना में 1.5 डिग्री सेंल्शियस से आगे न बढ़ने पाए। यह इसलिए भी जरूरी है कि धरती का तापमान पिछले सौ वर्षों में एक डिग्री सेल्शियस बढ़ चुका है जिससे ग्लोबल वार्मिंग, सुनामी और नई–नई बीमारियों का दौर चलने लगा। अभी कुछ देशों के बीच सम्मेलन के घोषणापत्र पर सौदेबाजी चल रही है। इसके बावजूद जलवायु परिवर्तन सम्बंधी समस्याओं को रोकने या कमी लाने पर एक उम्मीद बँधी है। लेकिन ज़ीरो उत्सर्जन की बात को लेकर अभी बात नहीं बन सकी है। जिन विकसित देशों और विकासशील देश कार्बन उत्सर्जन के लिए सीधे जिम्मेदार हैं वे 'ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन' की बात न करके 'नेट ज़ीरो उत्सर्जन' की बात कह रहे हैं। मतलब सीधे–सीधे बात न करके घुमाकर बात कही गई, जिससे सहमति नहीं बन पाई।

रूस के अलग तर्क

कार्बन उत्सर्जन के बारे में रूस के कार्बन उत्सर्जन के मुद्दे अलग तर्क हैं। रूस का कहना है कि 'हमारे देश में बहुत बड़े भूभाग पर जंगल हैं और पूरा साईबेरिया है जो इतनी गैसों का उत्सर्जन सोख सकता है जितनी हम छोड़ते भी नहीं। इसलिए हमें कटौती का कोई लक्ष्य रखने की जरूरत नहीं है। इसी तरह अन्य विकसित देशों का रवैया भी सबको साथ लेकर चलने वाला नहीं दिखा। हाँ, भारत की पहल को तवज्जो देते हुए दुनिया के देशों ने मान लिया कि जीवाश्म ईंधनों का उपयोग चरणबद्ध तरीके से बंद करने के बजाय इसके उपयोग को इसके चरणबद्ध तरीके से कम किया जाय। गौरतलब है सीओपी 26 शिखर सम्मेलन में लगभग 200 देशों ने एक जलवायु समझौते के लिए जलवायु प्रभाव वाली ग्रीन हाऊस गैसों के लिए जिम्मेदार कोयले के उपयोग को कम करने की योजना बनाने वाला पहला संयुक्त राष्ट्र जलवायु समझौता बन गया है। समझौते के तहत समझौते में शामिल देश अगले साल कार्बन कटौती पर चर्चा करने के लिए भी सहमत हुए हैं ताकि जलवायु संकट को 1.5 डिग्री सेल्शियस तक सीमित करने के लक्ष्य तक पहुंचा जा सके। सीओपी 26 के अध्यक्ष आलोक शर्मा ने समझौते की घोषणा करते हुए कहा कि अब हम इस धरती और इसके वासियों के लिए एक उपलब्धि के साथ इस सम्मेलन से विदा ले सकते हैं। हालांकि कई देशों ने भारत के रुख की आलोचना की है। इस बात को नहीं नकारा जा सकता कि भारतीय भाषाओं के अन्तर्सम्बन्ध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता आज कहीं पहले से अधिक महत्व के हो गये हैं। अपनी पहचान के लिए हमें हर हाल में, इस सम्बन्ध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। इन्हीं से हमारी पहचान है। इस लिए समय की आवश्यकता को समझते हुए प्रत्येक देशवासी को हिन्दी या भारतीय भाषाओं के सम्बन्धों पर सवाल न उठाकर अंग्रेजी की बढ़ती एकाधिकारिता पर सवाल उठाने चाहिए और इससे सावधान रहना चाहिए। अब समय आ गया है कि हिन्दीतर भाषी प्रदेशों को नए सिरे से हिन्दी प्रदेशों के अपने सम्बन्धों पर विचार–विमर्श करना चाहिए।

भारत ने अपनी स्थिति स्पष्ट की

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने ग्लासगो जलवायु शिखर सम्मेलन में पूछा कि विकासशील देशों से कोयले और जीवाश्म ईंधन अनुदान को चरणबद्ध तरीके से बंद करने के वादे की उम्मीद कोई कैसे कर सकता है, जबकि उन्हें अब भी उनके विकास एजंडा और गरीबी उन्मूलन से निपटना है। उन्होंने कहा, जीवाश्म ईंधन और उसके उपयोग ने दुनिया के कुछ

हिस्सों को सम्पन्नता और बेहतरी प्राप्त करने में सक्षम बनाया और किसी विशेष क्षेत्र को लक्षित करना ठीक नहीं। मंत्री महोदय का कहना था, हर देश अपनी राष्ट्रीय परिस्थितियों, ताकत और कमजोरियों के अनुसार लक्ष्य पर पहुंचेगा। विकासशील देशों को वैश्विक कार्बन बजट में अपने उचित हिस्से का अधिकार है। और इस दायरे में जीवाश्व ईंधन के जिम्मेदार उपयोग के हकदार हैं। ऐसी हालात में कोई कैसे उम्मीद कर सकता है कि विकासशील देश कोयला और जीवाश्म ईंधन अनुदान को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने का वादा कर सकते हैं। उन्होंने जनता के कल्याणकारी योजना एलपीजी के उपयोग की चर्चा करते हुए कहा, भारत कम आय वाले परिवारों को एलपीजी के उपयोग के लिए आर्थिक सहायता दे रहा है। यह सहायता खाना पकाने के लिए बायोमास जलाने धुंए को लगभग समाप्त करने और घरों के वायु प्रदूषण में कमी से स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत मददगार रही है।

आठ देशों की अहम जिम्मेदारी

चीन, भारत, अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, ईरान और नाइजीरिया ये आठ देश आबादी, क्षेत्रफल और कार्बन उत्सर्जन के लिहाज से दुनिया के बड़े अहम देश है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्बन उत्सर्जन के बारे में सुझाव अधिकांश देशों को माकूल लगे। गौरतलब है मोदी ने 2070 तक 'नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन' का वादा किया। वहीं पर जानकारों का मानना है कि पश्चिमी देशों ने जब लम्बे समय तक प्रदूषण फैलाते हुए अपना विकास किया है, तो प्रधानमंत्री उनके दबाव में न आएं। गौरतलब है, दुनिया की आबादी का 17 प्रतिशत होते हुए भी कुल उत्सर्जन में भारत की भागीदारी 5 प्रतिशत से भी कम है।'' यह फैसला पश्चिमी देशों की बदमाशी के आगे बिना आत्मसमर्पण किए लिया गया साहसिक फैसला है। वही पर भारत के जलवायु विशेषज्ञों का मानना है कि अक्षय ऊर्जा को बढ़ाने और 2.039 तक कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए देश के चार अल्पकालिक लक्ष्य काफी अहम हैं।

अमेरिका का दृष्टिकोण

सीओपी 26 के दौरान, जलवायु परिवर्तन सम्मेलन को लेकर अमेरिकी नेतृत्व का दुनिया में प्रदर्शन करने के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन के विचार स्पष्ट नहीं रहे। रूढ़िवादी–झुकाव वाले वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार राष्ट्रपति बाइडन ने उत्सर्जन कम करने को लेकर दुनिया में सहमति कायम करने के लिए रूस और चीन को अलग–थलग दिखाने की कोशिश की। हालाँकि अमेरिका और उसके सहयोगी मास्को और बीजिंग को हिलाने में नाकाम रहे।

रूस ने वादा किया

रूस का प्रतिनिधि मंडल जलवायु सम्मेलन में शामिल हुआ। वहां के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से सम्मेलन में सम्मिलित हुए। रूस ने अपनी स्थिति साफ करते हुए कहा कि वह 2060 तक खुद को 'कार्बन न्यूट्रल' बना लेगा। 2039 तक वनों की कटाई बंद करने का वादा करते हुए उसने 'वन और भूमि उपयोग पर ग्लासगो घोषणा' पर हस्ताक्षर किए,लेकिन 2030 तक मीथेन के उत्सर्जन में 30 फीसदी कटौती करने के समझौते पर वह हस्ताक्षर नहीं किया। गौरतलब है रूस जीवाश्म ईंधन के मामले में एक महाशक्ति है, इसलिए वह चाहता है कि ग्रीन एनर्जी पर जाने के लिए उसे लम्बा वक्त चाहिए। ग्रीन पीस एशिया के रूसी प्रतिनिधि याब्लोकोव का कहना था कि ''हर कोई चाहता है जल्द से जल्द कार्बन न्यूट्रल बनने के लिए रूस और प्रयास करे। इस विषय पर रूस का मानना है कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है, हालांकि रूस की अब इसपर कोई अतिमहत्वाकांक्षा नहीं है।

आस्ट्रेलिया ने हस्ताक्षर नहीं किए

सीओपी 26 शिखर सम्मेलन में आस्ट्रेलिया ने अपनी स्थिति साफ नहीं की। प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने दुनिया को ये बताया कि बिना कोयले को बाहर किए कैसे उनका देश 2050 तक नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को हासिल करेगा। ग्लासगो में जलवायु मसले पर भी ऑस्ट्रेलिया ने थोड़ी सुर्खियां बटोरीं। भारत, चीन, रूस, ईरान की तरह इसने भी 2030 तक मीथेन के उत्सर्जन को 30 फीसद तक कम करने की अन्तरराष्ट्रीय प्रतिज्ञा को मानने से इन्कार कर दिया। उसने कोयले से मिलने वाली बिजली को धीरे–धीरे खत्म करने और देश–विदेश मे कोयले के नए बिजली संयंत्रों में निवेश बंद करने के लिए दस्तख़त करने से साफ बना कर दिया।

ब्राज़ील कोरोना की दुहाई देता रहा

ब्राज़ील वासियों और वहां की सरकार के लिए यह

सम्मेलन कोई खास महत्व का नहीं रहा। यही कारण है कि ब्राज़ील इसमें खुलकर शामिल नहीं हुआ। जब कि ब्राज़ील के विशाल वर्षावन के चलते जलवायु परिवर्तन में ब्राज़ील के योगदान से दुनिया बहुत अधिक प्रभावित होती है। वहां के राष्ट्रपति बोलसोनारो सीओपी 26 शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं हुए। ब्राज़ील के जलवायु परिवर्तन के जानकारों का कहना है कि कोरोना महामारी के बाद ब्राज़ील में राजनीतिक और आर्थिक संकट गहरा हो गया है। सीओपी में हिस्सा लेने आई ब्राज़ील की 67 वर्षीय महिला डी सूजा का माना है कि 'यदि हम पेड़ों को काट रहे हैं तो हमें भोजन के लिए फिर से सोचने की जरूरत है। हमें परिस्थितिकी को लेकर जागरूकता बढ़ाने की ज़रूरत है। इसकी कमी के चलते ही समस्याएं पैदा हो रही हैं।''

ईरान में आर्थिक अस्थिरता है बड़ी वजह

ईरान ग्रीन हाऊस गैसों के शीर्ष 10 उत्सर्जकों में से एक है। ईरान में पिछले कई दशकों का सबसे भीषण सूखा पड़ा । इसके चलते वहाँ पानी की गम्भीर कमी हो गई और बिजली की आपूर्ति भी बाधित हो गई। इसके बावजूद ईरान कार्बन उत्सर्जन पर सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार है। सीओपी26 में हिस्सा लेने आए प्रतिनिधि मण्डल ने कहा कि यदि ईरान पर लगे प्रतिबन्ध हटा लिए जाएं तो उन्हें कार्बन उत्सर्जन को घटाने में कोई दिक्कत नहीं आएगी।

नाइजीरिया ने वादा किया

सीओपी 26 सम्मेलन में नाइजीरिया ने सकारात्मक रुख अपनाते हुए वादा किया कि 2060 तक वह कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने का प्रयास करेगा। लेकिन राष्ट्रपति मुहम्मदु बुहारी ने कहा, मरुस्थलीकरण, बाढ़ और कटाव को पर्याप्त सबूत बताकर नाइजीरिया के किसी भी नागरिक को पर्यावरण के लिए तत्काल उपाय करने के लिए समझाने की जरूरत नहीं है। इस कटाक्ष के बावजूद नाइजीरिया चाहता है कि विकासशील देशों के लिए बनाए गए सालाना 100 अरब डालर के फण्ड से उसे भी कुछ हिस्सा मिले। साथ ही, वह चाहता है कि गैस क्षेत्र में विदेशी निवेश आए, ताकि नाइजीरिया अपने राजस्व के मुख्य स्रोत कच्चे तेल का मजबूत विकल्प खड़ा कर सके। लेकिन वहां की ज़मीनी हकीकत कुछ और कही जा रही है। नाइजीरिया डेल्टा में जलवायु परिवर्तन पर काम करने वाले कार्यकर्ताओं का कहना है कि तेल की खुदाई और जमीन से रिस रही गैस से जलने वाली आग को लेकर चेतावनी दी जाती रही है, लेकिन सरकार और अन्तराष्ट्रीय तेल कम्पनियां इस ओर गौर नहीं कर रही हैं।

सऊदी अरब का दोहरा रुख

पिछले महीने सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने 2060 तक कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को पाने की बात कही थी। इससे यह आशा बंधी थी कि दुनिया के इस सबसे बड़े तेल निर्यातक देश की कार्बन उत्सर्जन कम करने के बारे में प्रतिबद्धता सकारात्मक है और यह एक बहुत कबीलेतारीफ है। लेकिन तेल से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन से निपटना जरूरी है, लेकिन ऐसा हाइड्रोकार्बन को 'खतरनाक' बताकर नहीं किया जाना चाहिए। अरब के ऊर्जा मंत्री का कहना है कि दुनिया को जीवाश्म ईंधन और अक्षय ऊर्जा दोनों की जरूरत है।

चीन–अमेरिका के बीच समझौता

ग्लासगो के जलवायु सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि चीन और अमेरिका के बीच हुआ जलवायु सहयोग का समझौता है। चीन और अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं और तापमान बढ़ाने वाली ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में इनका 40 प्रतिशत का योगदान है। गौरतलब है एक साल से चल रही बैठकों के दौर के बाद दोनों देशों ने फैसला किया है कि जलवायु परिवर्तन की रोकथाम पर सहयोग बढ़ाने के लिए दोनों एक कार्यदल बनाएंगे जो इस पूरे दशक में मिथेन गैस और कार्बन गैसों और कार्बन गैसों की रोकथाम करने और स्वच्छ ऊर्जा अपनाने में मदद करेगा। गौरतलब है इसके पहले चीन कोयले का प्रयोग बंद करने के मामले पर हाथ खींच रहा है। इस समझौते से उसके रवैये में बदलाव दिखाई दे रहा है।

दूसरा बड़ा समझौता व घोषणा जिसके तहत वनों की अन्धाधुन्ध कटाई को लेकर 105 देशों ने कटाई पर रोक लगाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। गौरतलब है 'टिकाऊ विकास और समावेशी ग्रामीण बदलाव को प्रोत्साहन देने' पर खुलकर चर्चाएं हुईं। लेकिन विकसित देशों का ढुलमुल और गैर जिम्मेदार रवैया क्या पहले की तरह रहेगा या वे पर्यावरण के हित में जंगल और जनसामान्य के बेहतर जीवन यापन पर अपनी सोच में बदलाव करने पर विचार करेंगे? वनों की

कटाई और ग्रामीण समावेशी विकास पर जो चर्चाएं हुईं हैं और ग्रीन हाऊस गैसों की बढ़ती समस्या पर जो समझौते हुएं हैं वे इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इस समझौते में ब्राजील, इंडोनेशिया और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो शामिल हैं जो दुनिया के वन्यजीव–सम्पन्न उष्णकंटिबंधीय वनों के घर हैं। गौरतलब है जंगलों की कटाई फॉसिल ईंधन के बाद, जलवायु परिवर्तन के सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरकों में से एक है। द फारेस्ट स्अीवर्डशिप काउंसिल (एफएससी) के मुताबिक ''बुनियादी रूप से दुनिया के जंगल किसी राजनीतिक घोषणापत्र से नहीं बचाए जा सकते हैं। अपनी आय और जीविका के लिए जंगलों पर निर्भर लोगों के समक्ष वन सुरक्षा और टिकाऊ वन प्रबंधन को आर्थिक रूप से आकर्षण समाधान के रूप में प्रस्तुत करना होगा।''

ग्लासगो में वन कटाई रोकने के लिए जो समझौता हुआ है उसके लिए फंडिग जुटाना एक बड़ा मुद्दा है। अभी महज 19 अरब डालर की फंडिग हुई है जिसमें एक तिहाई हिस्सा निजी क्षेत्र सेक्टर के निवेशकों और एसेट प्रबंधकों से आएगा जिसमें अवीवा, श्रोडर्स और आक्सा शामिल हैं। गौरतलब है जलवायु वार्ताओं में 50 वनाच्छादित उष्णकटिबंधीय देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले द कोलिशन ऑफ रेनफॅरिस्ट नेशंस (वर्षा वन वाले देशों का गठबंधन) जैसे संगठनों और समूहों का मानना है कि इस समझौते को बनाए रखने के लिए अगले एक दशक में अतिरिक्त 100 अरब डॉलर हर साल लगेंगे। यानी अभी और अधिक फंडिग की आवश्यकता है।

तीसरा समझौता और घोषणा मिथेन गैस के उत्सर्जन को लेकर हुई। ताज़ा वैज्ञानिक आँकड़ों के अनुसार तापमान में हो रही एक तिहाई वृद्धि के लिए मिथेन जिम्मेदार है। गौरतलब है मिथेन मुख्य रूप से गैस और तेल के कुंओं, मवेशियों और शहरी कचरे के पहाड़ों से निकलती है। यही कारण है कि रूस इस समझौते पर सहमत नहीं हुआ।

चौथा समझौता और घोषणा कोयले के इस्तेमाल को लेकर हुई। इस समझौते पर पोलैंड, वियतनाम और चिली तैयार हो गए। गौरतलब है इन देशों के अलावा 40 अन्य देश भी कोयले का प्रयोग बन्द करने पर सहमत होते दिखे। गौरतलब है कोयले से सबसे अधिक ग्रीन हाऊस गैसें निकलती हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि दुनिया की 37 प्रतिशत बिजली कोयले के जरिए ही बनती है। भारत और चीन कोयले के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं। इसलिए चीन और भारत ने कोयले पर कोई वादा करने से मना कर दिया। लेकिन चीन और अमेरिका के बीच समझौता होने के बाद भारत भी इस ओर नए सिरे से सोचने लगा है। हो सकता है अगले एक–दो दशकों में भारत में कोयले का उपयोग काफी कम कर दिया जाए।

ग्रीन हाऊस गैसों में कटौती

ग्रीन हाऊस गैसों में कटौती का मुद्दा कई सालों से जलवायु सम्मेलनों में चर्चा में रहा है। गौरतलब है 2015 में पेरिस जलवायु सम्मेलन में तय हुआ था कि यदि हमें प्राकृतिक विनाश से बचाना है तो हमें वायुमण्डल के औसत तापमान को 1.5 डिग्री तक लाना होगा। इसके लिए सभी देशों से ग्रीनहाऊस गैसों में कटौती की अपनी–अपनी योजनाएँ बनाने और पेश करने को कहा गया था। लेकिन ट्रम्प के सत्तासीन होते ही वे मुकर गए। और अब बाइडन के आने के बाद अमेरिका चीन के साथ मिलकर उसने कोयले से चलने वाले बिजली घरों को बन्द करने का आह्वान किया है जिनमें गैसों को रोक कर ज़मीन में दबाने की तकनीक नहीं है।

ग्लासगो सम्मेलन सम्पन्न होने पर सभी देशों ने जिन समझौतों पर अपनी सहमति जताई वे सभी कार्बन उत्सर्जन और जंगलों की कटाई रोकने के लिए हुए। लेकिन एक महत्वपूर्ण विषय इस बार छूट गया जो कार्बन उत्सर्जन के लिए वैज्ञानिकों के अनुसार जिम्मेदार है। वह है डाटा भण्डारण से हो रही कार्बन उत्सर्जन की समस्या। पिछले कुछ दशकों में मानव जनित गतिविधियों के कारण कार्बन डाइऑक्साइड और दूसरी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन प्रति वर्ष एक फीसद की दर से बढ़ा है। जिन वजहों से जलवायु परिवर्तन सम्बंधी समस्याएं बढ़ी हैं उन वजहों पर जलवायु सम्मेलनों पर चर्चा होती रही है, लेकिन कार्बन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार देशों ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए वे कदम नहीं उठाए जिसकी आज जरूरत है। जिस वजह से दुनियाभर में जलवायु परिवर्तन से ताल्लुक रखने वाली घटनाएं बढ़ रही हैं। गौरतलब है भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में जलवायु परिवर्तन की बढ़ती घटनाएं इसका प्रमाण हैं।

पिछले कुछ सालों में कार्बन उत्सर्जन के लिए

जिम्मेदार विमानन, परिवहन, खाद्य उद्योग के क्षेत्र के अलावा कुछ ऐसे भी कारक हैं जो कार्बन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन इनके बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी। कार्बन उत्सर्जन पर कार्य करने वाली संस्थाओं ने इस ओर ध्यान केंद्रित किया तब जाकर पता चला है कि ऑन लाइन डाटा के जरिए संग्रहित अनावश्यक फोटो से भी कार्बन उत्सर्जन की समस्या तेजी से बढ़ती है। गौरतलब है यह ऐसी समस्या है जिसका ताल्लुक डाटा इस्तेंमाल करने वाले हर व्यक्ति से है। गौरतलब है दुनियाभर में सर्वर से अनावश्यक डाटा बढ़ा रहा है कार्बन उत्सर्जन की समस्या। जैसे–जैसे सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वाले उपभोक्ताओं के तादाद बढ़ रही है वैसे–वैसे यह समस्या बढ़ रही है। इसलिए वैज्ञानिक इसे लेकर चिंतित हो गए हैं। इसलिए इस तरफ गौर करने की जरूरत सबसे ज्यादा है।

सोशल मीडिया मौजूदा दौर में आम जरूरत बन गया है। और सोशल मीडिया का संचालन ऑन लाइन डाटा के बिना कोई भी ऑनलाइन कवायद नहीं की जा सकती है। अभी तक यह माना जाता रहा है कि सोशल मीडिया का अच्छा–बुरा असर व्यक्ति के मस्तिष्क, शरीर, परिवार, समाज और उन तमाम क्षेत्रों पर पड़ता है जिससे इंसान किसी न किसी रूप में जुड़ा होता है। गौरतलब है सोशल मीडिया से कई तरह के फायदे हैं तो नुकसान भी है, लेकिन जलवायु परिवर्तन की बढ़ती समस्या से भी डाटा संग्रहण का कोई रिश्ता हो सकता है, अभी तक यह किसी को नहीं मालुम। लेकिन ताज़ा अध्ययनों से यह बात निकल कर आई कि डाटा स्टोरेज का सीधा असर जलवायु परिवर्तन पर होता है। इंस्टीट्शन ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालॉजी (आईईटी) के एक शोध के मुताबिक सर्वरों के जरिए बेमतलब डाटा संग्रहित करने से हर साल 10.2 किग्राम CO_2 उत्सर्जन जमा करती है। जो कार्बन उत्सर्जन के लिए भी जिम्मेदार है। इसके मद्देनजर अवांछित ईमेल, वीडियो और फोटो को हटाने की सलाह वैज्ञानिकों ने दी है। अध्ययन के मुताबिक वर्तमान में मौजूद ज्यादातर डाटा के जरिए अपलोड की गई फोटो पिछले दो सालों की हैं। आईईटी डिजिटल पैनल के अध्यक्ष क्रिस कार्टराईट के अनुसार हमारे जीवन में जिस डेटा पर हम अब बहुत अधिक भरोसा करते हैं, वह भी छिपे हुए रूप से कार्बन उत्सर्जन की वजह बनता है। यह समस्या विश्वव्यापी है। इसलिए अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा सहित विकसित और विकासशील देशों में इसे लेकर चर्चा शुरू हो गई है। अध्ययन की रिपोर्ट कहती है अकेले ब्रिटेन में अनावश्यक संग्रहित डेटा से उत्पन्न कुल कार्बन लंदन से ऑस्ट्रेलिया के लिए वापस आने वाली 112, 500 उड़ानों के बराबर है। व्यक्तिगत रूप से हमारे इस्तेमाल न होने वाले डाटा का कार्बन फुटप्रिंट जीवनभर उत्पन्न होता है, जो लैंड्स एंड से जॉन ओ' ग्रोट्स तक ड्राइविंग करके जाने के बराबर है। यह समस्या ऑन लाइन पोस्ट की जाने वाली तस्वीरों से लगातार बढ़ रही है। इसलिए वैज्ञानिकों ने चेताया है कि यदि अनावश्यक ऑन लाइन तस्वीरों के पोस्ट करने पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया तो आने वाले वक्त में कार्बन उत्सर्जन की समस्या तेजी से बढ़ेगी, जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्याएं तेजी से बढ़ सकती हैं।

www.vedyog.net

योगदर्शन के प्रथम पाद – समाधिपाद पर योगसूत्रों और उनके व्यासभाष्य पर आधारित ५० प्रश्नों की प्रश्नमाला हमारी www.vedyog.net website पर online test के रूप में उपलब्ध है। हम हिन्दी एवम अंग्रेजी दोनों माध्यम से परीक्षा दे सकते हैं। इसमें हर प्रश्न के उत्तर हेतु ४ विकल्प दिए गए हैं। जिसमें आपको सही विकल्प को चुनना है। परीक्षा के माध्यम से हम अपने योगदर्शन से संबंधित ज्ञान की स्थिति का आकंलन कर पायेंगे।

FOLLOW SATYARTH-PRAKASH (INTRO-1)

– ✍ Dr. Roop Chandra 'Deepak'
Lucknow (U.P.)
Mob. 9839181690

Indian Culture in its roots is Vedic Culture. The combined population of present India uses the word 'Indian Culture' for the summation of customs and traditions of almost all sections of people living in India and following pro-Vedic as well as anti-Vedic systems. This view is widely praised today; but it carries us nowhere. We are modest and therefore praise all such things. We are too modest to say that only our culture is all best. This message is not subjective. In fact, Vedic Culture is the only culture meant for all people, all places and all times.

Vedic Culture continued to nurture all men and women on this planet for crores of years before the war of Mahabharata. Although occurred a few centuries earlier, a dip in this cultural continuity was felt in the times of Mahabharata. So far not too bad, the dip kept on going down continuously and more speedily to become a social deterioration and later a cultural downfall. Upto the sixth century BC, India had become an orthodox society of birth-based castes, practicing dogmas in the names of God, Vedas and Vedic Dharma.

In the meantime, several scholars, ascetics and reformers tried their best to remake Indian society; but none of them based his teachings purely on the Four Vedas. This was the thing what Rishi Dayanand did, and he did it all his body, mind and soul. He not only gave lectures and contested shastras successfully, but wrote the book 'Satyarth Prakash' which is a guide to Vedas, Vedic Culture and Vedic Society.

The System of Four Vedas is the real school of original Indian people, and Satyarth-Prakash its Nursery Class. If you read Satyarth-Prakash well, you would get more chances of success in obtaining the knowledge of Vedas. To ensure this success, one has to read and enact the teachings embodied in Satyarth-Prakash, right from the introduction to the main chapters, named as Samullas, numbering one to fourteen.

Rishi Dayanand writes in the Introduction :

''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है; अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।''

‘‘The main object of my writing this book is to elucidate true principles, i. e., to declare as truth what is truth and to declare as untruth what is untruth.’’ This was as translated by Pt. Ganga Prasad Upadhyay.

The above object seems to be easy and simple. It is simple as it is straight forward. But it is not easy. Why so? We should look at the literature written after the Mahabharata. First, there are eighteen Puranas. In fact, they are not written by Rishi Vyas; but they have been declared as written by him. The time of their creation is broadly between Buddha and Prithviraj. It is clear from the fact that they give an account of the Yavan and Turkish rulers. The Puranas alone contain four lacs shlokas, about twenty times more than the Vedic mantras in number. Eighteen Up-Puranas and eighteen Aup-Puranas are in addition to them.

The Puranas describe God both as formless and having forms as well, the soul both as becoming God and working without body, and the matter both as talking and vanishing. Thus the Puranas, world’s most voluminous literature, do not declare as truth what is truth and do not declare as untruth what is untruth. Really hats off to Rishi Dayanand!

Secondly, there are philosophical writings of Shankaracharya, Ramanujacharya, the Buddhist scholars and other authors. Shankaracharya has written that God is the only entity and none else, that the soul is God and not different from Him, and that the world is an illusion and not a reality. Ramanujacharya agrees that the soul and the world are both real but parts of God. The Buddhist scholars have written that God does not exist, that the soul has only a momentary and not permanent existence, and the world only appears as it exists only in the mind. All these scholars have not declared truth as truth or untruth as untruth.

Thirdly, there are other Sanskrit books, more in number than those written by Rishi Dayanand, where God’s incarnation theory has been discussed and His idol-worship propagated, along with the descriptions of salvation through river-baths, or simply by speaking certain godly names, so much so that no principle appears to exist in

those books. They certainly do not declare the truth and the untruth as Rishi Dayanand has done.

Fourthly, there are Hindi and other Indian language books, written by ascetic authors, describing God seen through naked eyes and working as asked by the devotees. These descriptions are against both the Vedas as well as the physical sciences. These books also belong to the club of earlier books declaring as truth what is untruth and declaring as untruth what is truth, quite opposed to the declarations of Rishi Dayanand.

Fifthly but not finally, the authors of foreign origins have also created huge literatures like individual philosophy, anti-Vedic religious books and fictions, in number of pages much more than Rishi Dayanand has done. These books are misleading the world like anything else; but their authors, rather professionals, are not honest enough to make declarations as Rishi Dayanand has uniquely made.

Thus it is a great and unique thing that Rishi Dayanand has done by declaring as truth what is truth and declaring as untruth what is untruth. The more important thing is that we, the true followers of both the Vedas and Rishi Dayanand, also speak and write in volumes. We should also speak and write the truth, and deny all that is untruth. This way we must follow the Satyarth-Prakash.

आर्ष क्रान्ति के सुधी पाठकों से

समाज सुधार, संस्कृति उन्नयन और धर्म जिज्ञासा क्षेत्र की अनेक पत्रिकाएं सोशल मीडिया पर आपने देखी और पढ़ी होगी । आर्ष क्रांति पत्रिका का तेवर और स्वरूप कैसा है इसे जानने की जिज्ञासा आपके मन में पैदा होती है, तो यह समझना चाहिए आप एक विचारवान और जिज्ञासु किस्म के बुद्धिमान व्यक्ति हैं । हमें आप जैसे क्रांतिकारी और प्रगति गामी विचारवान व्यक्ति का साथ चाहिए। फिर देर किस बात की । नीचे लिंक पर जाइए और फार्म भर कर हमें भेज दीजिए। अब आप जुड़ गए हैं ऐसी संस्था और पत्रिका से जो एक आदर्श समाज, उन्नतशील संस्कृति और मानव मूल्यों के धर्म की स्थापना के लिए कृतसंकल्प है । आप एक शुभ संकल्पवान व्यक्ति हैं और यह पत्रिका भी शुभ संकल्पों को मूर्त रूप देना चाहती है, एक आदर्श समाज निर्माण में हमारी संस्था और पत्रिका से जुड़कर आप अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं । आपका हमें इंतजार रहेगा।

इस लिंक पर क्लिक करके यह फार्म अवश्य भरें

http://bit.ly/aarshkranti

नोट – फॉर्म को भरने के लिए अपने मोबाइल / कम्प्यूटर में इन्टरनेट अवश्य चालू रखे

संतुलित जीवन के लिए पञ्चकोशों का महत्व

डॉ० सत्यकाम आर्य

अभि द्विजन्मा त्रि रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात्।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे।।'

– ऋग्वेद– १•१४६•४

ऋषि – दीर्घतमाः औचथ्यः। देवता – अग्निः।
छन्द – विराट् अनुष्टुप।

अंग्रेजी अनुवाद – He, the invoker of Devines (Nature 's bounties), is manifested in the two realms (physical and spiritual). He bestows all excellent riches on that moral who, with all his sincerety, surrenders completely to Him. Such a man is blessed with excellent progeny.

अर्थ – जैसे गर्भस्थ शिशु माता के साथ अत्यन्त निकट – सम्बन्ध होने से संस्कारित बनता है , वैसे ही आदर्श गुरुकुल में 'ब्रह्मचारी' आचार्य श्रेष्ठ के निकटस्थ रहकर 'द्विजन्मा' अपनी पूर्वापर की सभी त्रुटियों को दूर करते हुए विद्यावान् एवं चरित्रवान् बनने में सफल होता है। गुरु कृपा से प्राप्त 'विद्या–दीप्ति से प्रदीप्त' हुआ गुरुकुल का वह 'स्नातक' अगले तीनों 'आश्रमों की' – क्रमशः (१) 'गृहस्थ आश्रम' में गृहस्थ – लोक सम्बद्ध सर्वोत्तम व्यवहार•(२) 'वानप्रस्थ आश्रम' में वानप्रस्थ– लोक सम्बद्ध ध्यान, तप और विज्ञान वृद्धि• और (३) 'संन्यास आश्रम' में संन्यास– लोक सम्बद्ध वेदादि विद्या का प्रचार और धर्मोपदेश आदि 'सभी मर्यादाओं में अवस्थित होता है'। मर्यादा मण्डित और यम–नियमादि के स्रोत इन आश्रमों में 'वह' आश्रमी 'अपनी प्रजाओं' के पालन – पोषणादि के स्थान पर 'वह' अपने सामर्थ्यानुसार समाजोत्थान हेतु धन और विद्या का सविनय दान करते हुए सदा 'ईश्वरोपासना' द्वारा शक्ति संचय करता है। प्रभु प्रदत्त 'यह शक्ति' मर्यादा में स्थित रहते हुए समाज रूप पुरुष की सेवा करने का ठोस आधार है।

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः।
पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्विथा सुतः पौर इन्द्रभाव।।

– ऋग्वेद– २.११.११

ऋषिः –– गृत्समदः।
देवता –– इन्द्रः।
छन्दः –– निचृत्पङ्क्तिः।

अंग्रेजी अनुवाद – O resplendent self, may drink and drink again the consummate spiritual bliss and may this joy invigorate you by inspiring the physical personality. Verily this consummate bliss would give full satisfaction of self realization to the soul.

अर्थ – लक्ष्य से विचलित करने वाले 'काम वासना रूप शत्रु' के हिंसक 'हे जितेन्द्रिय पुरुष !' तू उत्तम चर्या, सात्विक आहार, सतत संयम और प्रभु स्मरण से 'शरीर में उत्पन्न और संरक्षित' 'सोम शक्ति' को 'सुनिश्चित रूप' से आचमन करने वाला बन। शरीर को सुदृढ़, मन को प्रसन्न और बुद्धि को प्रखर बनाने वाले आधारभूत साधन ये 'सोमकण' तुम्हारे जीवन में सदैव 'हर्ष और उल्लास' प्रदान करने वाले हों। पञ्चभूत रचित स्थूल शरीर में ही संव्याप्त होकर तेरे 'उदर' का 'विधिवत पूरण' करने वाले 'ये सोम समूह' तेरा 'उत्तरोत्तर संवर्धन' करें। 'ओजस्वरूप उत्पन्न हुए' इस 'शरीर पुरी' का पालन व पूरण करने वाले ये ओषधि रूप सोम तुझ सोम संरक्षक 'जितेन्द्रिय पुरुष' को 'पूर्णतः संतृप्त' करने वाले हों। वस्तुतः शरीर निर्मात्री सप्तधातुओं के साररूप इन 'सोम विन्दुओं' का यत्नपूर्वक रक्षण ही सभी 'पञ्चकोशों' की समुन्नति से प्राप्त 'आत्मानन्द' का स्वस्थ एवं सन्तुलित साधन हैं।

अन्न की महत्ता और उपयोगिता दर्शाता है अन्नप्राशन संस्कार

– ✍ डॉ. विक्रम कुमार विवेकी

शिशु के संस्कारों के साथ उसके हाव–भाव और दिनचर्या का एक अलग ही रूप–रंग है। इसका वर्णन महाकवि कालिदास ने शाकुन्तलम में करते हुए एक अलग तरह का मनोहारी रूप प्रस्तुत किया है। महाकवि कहते हैं बच्चों की अधखुली दाँतों की कुछ कलियाँ, अकारण मुस्कान, तुतलाती अस्पष्टवाणी, धूलसरित देह की मिट्टी से मलिन होने वाले माता–पिता के अंग धन्य हैं। बचपन जीवन का सबसे पवित्र, रहस्यमय और आनन्दमय समय होता है। आयु बृद्धि के साथ जब सांसारिक जीवन से शिशु परिचित होता है तब उसमें कई तरह के परिवर्तन होते हैं। उन परिवर्तनों को समझकर अभिभावक (माता–पिता) को उचित आहार–विहार की व्यवस्था करनी चाहिए। ध्यान देने की बात है कि जैसे–जैसे शिशु बढ़ता है उसके शरीर के लिए वे सभी चीजों की आवश्यकता पड़ती है। शारीरिक, मानसिक और प्राणिक विकास के लिए अन्न, फल और गाय के दूध की आवश्यकता पड़ती है। शिशु के आयु के छः महीने में माँ के दूध के अतिरिक्त दालादि के पानी देना प्रारम्भ कर दिया जाता है। लेकिन वैदिक परम्परा में जब शिशु अन्न खाने व पचाने की स्थिति में जब हो जाता है तब अन्नप्रासन संस्कार की व्यवस्था करनी चाहिए। वैदिक परम्परा में जिन सोलह संस्कारों की करने की परम्परा है उनमें गर्भाधान के बाद किये जाने वाले संस्कारों में अन्नप्रासन संस्कार भी महत्त्वपूर्ण है। अन्य संस्कारों की तरह ही इसमें धर्माचार्य के द्वारा यह संस्कार करना चाहिए और इसके महत्त्व को समझते हुये इसे आहार–विहार के नियमों में सम्मिलित करना चाहिए। इससे जहाँ शिशु में आहार–विहार के नियमों में रहने की आदत पड़ती है वहीं पर उसे सात्विक और पोषक आहार के सम्बन्ध में धीरे–धीरे जानकारी भी परिवार के माध्यम से हो जाती है। ध्यान रखने वाली बात यह है कि अन्नप्रासन संस्कार की महत्ता को सगे–सम्बन्धियों और कौटुम्बिक–जनों को आचार्य के माध्यम से विधिवत् जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इससे अगली पीढ़ी में संस्कारों की महत्ता की समझ बढ़ती है। डॉ. विक्रम कुमार विवेकी जी द्वारा प्रस्तुत लेख पाठकों को पूर्व की तरह पसन्द आएगा ऐसी आशा है।

– सम्पादक

नवजात शिशु प्रारम्भ में 'क्षीराद' होता है अर्थात् दूध पीने वाला होता है। वह डायरेक्ट मातृस्तन से मुख द्वारा अपना भोजन ग्रहण करता है। बीच में कोई कीटाणु या मिलावट आदि की बाधा नहीं होती। परमात्मा व प्रकृति ने अज्ञ, अबोध, व पराश्रित शैशव के पोषण का कितना आश्चर्यजनक प्रबन्ध किया हुआ है, यह देखकर हैरानी होती है। शिशु के जन्म लेने से पूर्व ही माता के स्तन में दूध का भण्डार होने लगता है। जब शिशु के दांत निकलने शुरू होते हैं तब वह 'क्षीरान्नाद' बने ऐसा शास्त्रों में विधान है। अतः आश्वलायन गृह्यसूत्र ने व्यवस्था दी है कि बालक का छठे महीने में अन्नप्राशन संस्कार करना चाहिए। जीवन के अनेक पड़ावों में अन्न ग्रहण प्रारम्भ करने का पड़ाव भी स्वयं में महत्वपूर्ण है। अतः इस अन्न ग्रहण की प्रथम–प्रक्रिया को संस्कार का रूप दिया गया है।

अन्नप्राशन यानी अन्नभक्षण संस्कार इस बात की ओर संकेत करता है कि शिशु को पौष्टिक व सन्तुलित आहार देना है। माता के दूध की तरह से स्वच्छ, रोगरहित एवं पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण अन्न का ही प्राशन उसे कराना है। इस संस्कार का मूल भी यजुर्वेद ऋचा में प्राप्त होता है। –

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।
(11/83)

इस संस्कार का समर्थन आश्वलायन गृह्यसूत्र 1/16/5, मानव गृह्यसूत्र 1/10 1/20/2, जैमिनीय गृह्यसूत्र 1/10 तथा कौषीतकी गृह्यसूत्र 1/27/4 में भी है। इस संस्कार में विनियुक्त मन्त्र शिशु आहार के साथ–साथ सम्पूर्ण जीवन खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की विशेषताओं की ओर ही संकेत करते हैं। गृह्यसूत्रों के अनुसार चावल को साफ करके भात बनाकर उस भात में गौ का घी, दही तथा मधु–शहद को मिलाकर तथा उसे खिलाते हुए अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न करना चाहिए। जिन ऋचाओं के पाठ के साथ चावल को स्वच्छ करने व

भात को बनाने तथा उस की आहुतियां देने का विधान है, उन मन्त्रों में शरीर, मन, इन्द्रियों व बुद्धि को बल देने वाले भोजन की ओर ही संकेत है। इस तथ्य की चर्चा गीता में भी पायी जाती है –

आयुः–सत्त्व–बलारोग्य–सुख–प्रीति –विवर्धनाः।
रम्याः स्निग्धाः स्थिराहृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।
(17/6)

छोटे बालक को प्रारम्भ में खिलाया जाने वाला अन्न चावल आयुर्वेद–सम्मत है जो हल्का, शीघ्र पचने वाला, स्वच्छ व शुभ होता है। इसमें मिलाये जाने वाले भोज्य पदार्थ गोघृत व मधु आयुवर्धक, बलदाता व पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ व काव्यशास्त्र में एक वाक्य है – 'आयुघृतम्', 'घृतं वै आयुः' 'घृतेन आयुर्वर्धते इत्यर्थः।'

घृत से आयु बढ़ती है, घृत में शुद्ध प्रोटीन होता है। गौ के दूध से निकला घी स्वर्णयुक्त होता है। आयुर्वेद के अनुसार उस में सोने की मात्रा पायी जाती है। मधु रक्तवर्धक है, विशुद्ध, मधुर व मधुमक्खी के द्वारा संगृहीत पुष्प रस है जो शरीर के रंग, रूप को निखारता है। यह शरीर को उर्जा प्रदान करता है। 'घृतौदनं तेजस्कामः।' तेजस्वी होने के लिए घी और भात को खायें। इस प्रकार ये शास्त्रीय विधान अन्नप्राशन संस्कार के माध्यम से शुद्ध अन्न के शिशु पौष्टिक आहार के ग्रहण की चर्चा कर माता–पिता व उनके शिशु को सम्पूर्ण जीवन केवल अन्न ग्रहण के संकल्प लेने का सन्देश देते हैं।

अन्त में बच्चे के माता–पिता तथा अन्य स्त्री–पुरुष जो उस संस्कार के समय आशीर्वाद देते हैं।–त्वमन्नपतिरन्नादो वर्धमानो भूयाः।' बालक अन्न का स्वामी होकर अन्न का भोजन करने वाला बने व बढ़ता हुआ वह यजुर्वेद की निम्न ऋचा–विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम्'।। के अनुसार अन्नभक्षक बालक समस्त दिशाओं को प्रभावित करने वाला होवे। उपनिषद् में भी कथन है–'अन्नं ब्रह्म तदुपासीत'। अन्न ही ब्रह्म है, उसी का सेवन करे। घृत दधि व मधु मिश्रित अन्न से अन्न भोजन की वृत्ति बनती है और मांसाहार से बचकर शिशु सात्विक संस्कारों से सम्पन्न होता है। इसलिए दुग्धाहार के पश्चात् अन्न–ग्रहण के प्रथम प्रयास को ऋषियों ने संस्कार का रूप प्रदान किया है।

अंधेरा क्यों भला मिटता नहीं

दीपकों की रोशनी तो बढ़ रही,
यह अंधेरा क्यों भला मिटता नहीं।
मुस्कुराहट जुगनुओं–सी चमकती,
प्यार आंखों में मगर दिखता नहीं।।१।।

पर्व आते हैं, मनाने के लिए,
पर्व का उद्देश्य खोता जा रहा।
हम प्रथाओं के हुए हैं दास–से,
जश्न हर मायूस होता जा रहा।
यूँ चढा संकीर्णता का आवरण,
मोल का भी स्नेह, अब बिकता नहीं।।२।।

फूल के बदले, नुकीले शूल हैं,
क्या विधाता की कोई हम भूल हैं?
जब मनुज ही मनुज से मुंह मोड़ ले,
यूँ लगे सब कर्म, अपने धूल हैं।
इस अजनबी मानवों की भीड़ में,
कोई अपना–सा हमें लगता नहीं।।३।।

दीप की पंक्ति सजाते जब कभी,
एक दीपक उस कृषक के नाम का।
कौन रखता है जलाकर स्नेह से,
मानकर उपकार उसके काम का।
यूँ श्रमिक के श्रम भरे एहसान का,
जो करे प्रतिदान, वह दिखता नहीं।।४।।

पर्व बन जाए विषय भी गर्व का,
यदि दिलों की खिड़कियां हम खोल दें।
भूलकर बीते हुए शिकवे–गिले,
प्रीति की वाणी परस्पर बोल दें ।
जो उदासी को घटाकर खुशी दे,
मीत ऐसा अब कहीं दिखता नहीं।।५।।

–✍ वेद कुमार दीक्षित
(देवास)

अंग्रेजी की उपयोगिता और अनिवार्यता : एक विमर्श

– ✍ डॉ. सीतेश आलोक

भारत की एक प्रसिद्ध राजनेता की बहन राजदूत बनकर रूस गईं। उन्होंने अपना परिचय पत्र रूस के राष्ट्रपति के सम्मुख अंग्रेजी प्रस्तुत किया। उन्होंने अंग्रेजी में ही रूस के राष्ट्रपति से बात की, जिसका अनुवाद रूसी में एक अनुवादक ने की। जब सामान्य परिचय का कार्यक्रम समाप्त हो गया तो रूस के राष्ट्रपति ने पूछा–"आप के देश की कोई अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है? यह सुनकर राजदूत को कोई उत्तर देते नहीं बना। ऐसी न जाने कितनी शर्मसार कर देने वालीं घटनाएँ आए दिन घटती रहती हैं, लेकिन हम गुलाम मानसिकता में इस कदर जकड़ चुके हैं कि कोई भी शर्मसार कर देने वाली घटना हममें स्वाभिमान नहीं जगाती। भारत का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्रता के इन चौहत्तर वर्षों में भारत की कोई अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है। क्या अमृत महोत्सव मनाना महज कोटापूर्ति नहीं है? जिस देश के नागरिकों में अपनी संस्कृति, भाषा, धर्म और देशाभिमान के प्रति कोई गौरव का भाव न हो, उस देश को विश्व गुरु कहलाने का क्या कोई अर्थ है? जैसे–जैसे समय बीत रहा है वैसे–वैसे देश में पराधीनता और पाखण्ड की मनोवृति बढ़ रही है। विश्व भाषा होने के अंग्रेजी के झूठे प्रचार ने भारत को हीनता के गर्त में डुबो दिया है। फिर भी हम बेशर्म बन स्वयं को विश्व गुरु कहने में संकोच नहीं करते! सितम्बर अंक में इस देख का आरम्भिक चरण प्रकाशित हुआ था। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सीतेश ओलोक की पुस्तक'चलती चक्की' से उद्धृत लेख कई अर्थों में नई पीढ़ी को प्रेरणा देने में सक्षम है। आशा है लेख पाठकों को पसंद आएगा।

– सम्पादक

गतांक से आगे

यह मानसिक दासता, स्वतन्त्रता के बाद की देन है। 1947 के पूर्व बने चलचित्रों में माताजी, पिताजी, चाचाजी, नमस्ते आदि शब्द देखने–सुनने को मिलते थे, किन्तु उसके बाद से धीरे–धीरे सब कुछ बदलता गया। अब घरों में या बाहर डेड, मम्मी, अंकल, हाय, ओके, गुडमार्निंग, गुडनाइट यही सब सुनने को मिलता है। इतना ही नहीं, हमें लगता है कि घड़ी समय नहीं बता सकती–बस 'टाइम' बताती है। लोग पूछते हैं– टैम क्या हुआ जी? संख्याएँ भी अंग्रेजी में ही बताई जाती हैं। कोई भी अपना दूरभाष हिन्दी में नहीं बताता है कभी संदेश छोड़ते समय आप अपना दूरभाष बताइए तो उधर से खीझ भरा स्वर सुनने को मिलता है–सैन यहाँ कर दीजिए। कोई भी अनपढ़ रसीद देते समय अपना 'सैन' इंगलिस में ही करता है।

लोगों में अंग्रेजी के प्रति आकर्षण यदि ज्ञानवर्धन के लिए हो, अंग्रेजी साहित्य पढ़ने–सुनने के लिए हो, तो यह बात समझी जा सकती है। या अंग्रेजी का अध्ययन तकनीकी विषयों के उच्चस्तरीय विद्यार्थियों के लिए हो तो वह बात समझ में आ सकती है। परन्तु अंग्रेजी–भाषी देशों की प्रभुसत्ता एवं आर्थिक चमक–दमक से प्रभावित होकर अंग्रेजी की भोंड़ी नकल लज्जा से सिर नीचा ही कर सकती है।

यह दासता एवं हीनता की मानसिकता हमें बहुत दूर ले आई है और बड़ी तेजी के साथ अपने आप से बहुत दूर लिये जा रही है। इसके प्रत्यक्ष प्रमाण प्रतिदिन ही मिलते हैं। आप किसी उत्सव के अवसर पर शुभकामना संदेश भेजने के लिये कोई शुभकामना कार्ड ढूँढने निकलिए.....चाहे दीपावली हो या होली, या नया वर्ष.....हर ओर अंग्रेजी में छपे संदेश ही मिलेंगे। किसी के यहाँ विवाह हो, या मुंडन–कनछेदन, निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में ही आएगा। देखा–देखी निम्न आर्थिक वर्ग के नागरिक भी आपके पास आकर कहेंगे कि बेटी का विवाह है कार्ड छपाने के लिए 'इंगलिस' में लिख दीजिए। न तो वह स्वयं अंग्रेजी समझता है और न कोई उसका कोई नाते–रिश्तेदार। आप अपने नौकर को या पड़ोस के किसी अशिक्षित को अक्षर ज्ञान देने

का प्रयत्न करके देखिए...उसकी हिन्दी सीखने में रुचि शायद ही दिखे। वह यथासम्भव आपसे कुछ अंग्रेजी के शब्द या वाक्य सीखना चाहेगा।

देश में सम्पर्क भाषा के स्थान पर अंग्रेजी को जो स्थान मिला उससे परोक्ष में भी अनेक घातक परिणाम निकले, जिन्होंने जनमानस को दासता के विचित्र बंधनों में आ जकड़ा। अंग्रेजी के विस्तार एवं प्रभुत्व के कारण बाहर से अंग्रेजी की पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ बड़ी मात्रा में आ आती रहीं। हमारे देशवासियों पर पाश्चात्य जीवन शैली का प्रभाव निरन्तर बढ़ता रहा।

अंग्रेजी फ़िल्मों का आयात भी बढ़ा और पाश्चात्य शैली उन पर हावी होती रही। लोगों में अपने देश का साहित्य पढ़ने एवं अपनी संस्कृति के विषय में जानने की इच्छा का ह्रास हुआ। हमारे स्वयं अपने विषय में जो कुछ हमें विदेशी दृष्टि के माध्यम से देखने–पढ़ने को मिला, वही हमें अन्तिम सत्य लग रहा है। हमारी सोच क्या होनी चाहिए, हमारी जीवन शैली क्या होनी चाहिए, हमारी प्राथमिकताएँ क्या होनी चाहिए और हमारी कार्य प्रणाली कैसी होनी चाहिए, इस सब का निर्धारण पश्चिम दर्शन पर आधारित हो गए हैं।

परिणाम एक यह भी है कि हम वर्षगाँठ नहीं मनाते, घर–धर में बर्थ डे मनाते हैं उसी तरह केक काटकर, मोमबत्तियाँ बुझाकर और 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' गाकर, जैसा कि पश्चिम देशों में होता है। बिना केक काटे हम जन्मदिन मनाने की कल्पना नहीं कर सकते। देखा देखी मजदूरों, कबाड़ियों आदि के घर में भी इसी भोड़ी नकल के रूप में रूप में बर्थ डे मनाने की परम्परा घर करती जा रही है।

ऐसा ही कुछ अनुभव है संगीत के सम्बन्ध में, जहाँ शास्त्रीय संगीत सभाओं में सुनने वाले कम होते जा रहे हैं, पॉप संगीत के प्रति लोगों में पागलपन की सीमा तक आकर्षण बढ़ रहा है। कुछ समझ मे आए या न आए, भले ही गर्मी के मारे पसीना छूट रहा हो, परन्तु इंग्लैण्ड, अमेरिका में जैसे लय पर उछला–कूदा जाता है वैसे ही उछलना–कूदना कलात्मकता है, और उन देशों से प्रमाण–पत्र लेकर आए कलाकारों के पीछे दीवानगी आवश्यक है।

एक व्यापक भ्रम यह है कि विश्वमंच पर स्थान पाने के लिए बुद्धिजीवियों के लिये अंग्रेजी परम आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि जब हमारे बुद्धिजीवी अंग्रेजी में अपना कोई विचार रखते हैं तो पश्चिमी देश उसे विशेष गम्भीरता से नही लेते। उनके अन्तर्मन में कहीं यह बात रहती है कि यह 'हमारी ही भाषा में, हमारी ही पुस्तकों से और हमारे ही विचारों से निकली हुई, कोई बात हमारे साने दुहरा रहा है–इसमें भला मौलिकता कहाँ से आएगी! वे कभी हमारी प्रशंसा भी करेंगे तो सम्भवतः उसी तरह जैसे हम अपने बच्चों के मुँह से, अपनी ही सुनाई हुई कोई कहानी सुनकर करते हैं–मात्र औपचारिकता के नाते, प्रोत्साहन देने के लिये। इसके विपरीत जब कोई जापानी या चीनी विद्वान अपना कोई विचार, अपनी भाषा में रखता है तो अन्तरराष्ट्रीय मंच पर उसे अधिक गम्भीरता के साथ लिया जाता है। यह उक्ति नितान्त व्यावहारिक एवं तर्कसंगत है कि आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान हो तो परिणाम कुछ अच्छे ही मिलते हैं।

देखिए! एक भाषा का अभाव क्या–क्या कर सकता है! एक भाषा के अभाव ने क्या–क्या कर दिया! यह सच है कि भाषा सब कुछ नहीं कर सकती, परन्तु भाषा आत्मसम्मान तो दे सकती है, जो बहुत कुछ पाने के लिए नितान्त आवश्यक है। इति

अतिथि – जिसकी आने और जाने में कोई भी निश्चित तिथि न हो तथा जो विद्वान् होकर सर्वत्र भ्रमण करके प्रश्नोत्तरों के उपदेश से सब जीवों का उपकार करता है; उसको "अतिथि" कहते हैं ।

पञ्चायतन पूजा – जीते माता, पिता, आचार्य, अतिथि और परमेश्वर को जो यथायोग्य सत्कार करके प्रसन्न करना है; उसको "पञ्चायतन पूजा" कहते हैं ।

पूजा – जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है; उसको "पूजा" कहते हैं ।

अपूजा – जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ और जो सत्कार के योग्य नहीं है; उसको जो सत्कार करना है; वह "अपूजा" कहाती है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द की विलक्षणता

– ✍ डॉ. रघुवंश

"दयानन्द जी ने यह अनुभव किया था कि देश के समाज को अवरुद्ध करने वाला वर्ग पौराणिकों, पुरोहितों, साम्प्रदायिकों तथा महन्तों का है।

यह इतना बड़ा निहित स्वार्थों का वर्ग बन गया है जो अपनी शक्ति में बहुत व्यापक और समर्थ है। सामाजिक जीवन में जितने अन्ध–विश्वास, कुरीतियाँ, नृशंसताएँ और अन्याय फैले हुए हैं उनके पीछे इसी वर्ग का समर्थन है।"

****

यह एक ऐतिहासिक संयोग ही कहा जायेगा कि गौतम संसार के कष्ट, पीड़ा, दुःख–दर्द, जरा–मरण को देख कर इनसे मुक्त होने के उपाय की खोज में घर से निकले और बुद्ध ने अन्ततः पाया व्यक्ति के निर्वाण का मार्ग। पर मूलशंकर घर से निकले थे संसार के बन्धनों से मुक्त होकर शुद्धस्वरूप शिव की खोज में और दयानन्द जी को मिला दुःखी, संतप्त, हीन भाव से ग्रस्त, अनेक कुरीतियों, पाखण्डों, दुराचारों से पीड़ित, कुंठित, गतिरुद्ध भारतीय समाज। और फिर वे व्यक्तिगत मोक्ष के मार्ग को भूल कर अपने समाज के उद्धार में प्राण–प्रण से लग गये। न कोई गौतम बुद्ध को अपने मार्ग से विचलित कर सका और न स्वामी दयानन्द को ही कर सकता था।

दयानन्द जी की संवेदन–क्षमता के समान उनकी विवेक–बुद्धि बहुत प्रखर थी। उन्होंने भारतीय समाज की यथार्थ स्थिति का जितना मार्मिक अनुभव प्राप्त किया, उतनी ही गहराई से उन्होंने इस समाज के अधःपतन के कारणों का विवेचन–विश्लेषण किया। भारतीय समाज की धारावाहिक परम्परा का बहुत सटीक विश्लेषण उन्होंने किया, और उसके द्वारा वे ठीक निदान भी कर सके हैं।

स्मरणीय है दयानन्द जी स्वामी विरजानन्द के पास पढ़ने के लिए मथुरा जब पहुँचे तो उनकी अवस्था लगभग छत्तीस वर्ष की थी। इस प्रकार चालीस वर्ष की अवस्था तक दयानन्द विभिन्न शास्त्रों, दार्शनिक सिद्धान्तों और आध्यात्मिक साधनाओं के अध्ययन और अभ्यास में लगे रहे थे। अतः एक ओर उनको तत्कालीन भारतीय समाज की यथार्थ स्थिति का सही ज्ञान था, तो दूसरी और भारतीय संस्कृति का उन्होंने मन्थन भी किया था। स्वामी विरजानन्द ने आर्ष ग्रन्थों और वैदिक संस्कृति की ओर उनका ध्यान आकर्षित करके उनको दिशा–निर्देश दिया था।

अपने परिभ्रमण काल में दयानन्द ने यह अनुभव किया था कि देश के समाज को अवरुद्ध करने वाला वर्ग पौराणिकों, पुरोहितों, साम्प्रदायिकों तथा महन्तों का है। यह इतना बड़ा निहित स्वार्थों का वर्ग बन गया है जो अपनी शक्ति में बहुत व्यापक और समर्थ है। सामाजिक जीवन में जितने अन्ध–विश्वास, कुरीतियाँ, नृशंसताएँ और अन्याय फैले हुए हैं उनके पीछे इसी वर्ग का समर्थन है। उन्होंने इस बीच भारतीय दर्शन, धर्म, अध्यात्म, आचार–शास्त्र, साधना का गहरा अध्ययन और अभ्यास किया था, इसके माध्यम से उन्हें भारतीय संस्कृति की मूल धारा की स्वछन्दता, गतिशीलता और मौलिकता की सही पहचान भी हुई।

अपनी संस्कृति के उच्चतम मूल्यों के अनुभव और साक्षात्कार से उनके मन में यह प्रश्न बारबार उमड़ता रहा कि इस महान् संस्कृति के देश और समाज की पतनावस्था का कारण क्या है ?

जिस जाति ने जीवन के उच्चतम मूल्यों की उपलब्धि की, व्यक्ति और समाज तथा व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन के समन्वय तथा सामंजस्य की श्रेयस्कर भूमिकाएँ प्रस्तुत की हैं, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों की सुन्दर व्यवस्थाएं दी हैं, उस जाति की ऐसी दीन–हीन अवस्था का कारण क्या है? ऐसे शक्तिशाली और समर्थ मानस की ऐसी कुंठित, गतिरुद्ध और विवेकहीन अवस्था क्यों हो गई है?

स्वामी विरजानन्द ने दयानन्द का ध्यान अनार्ष ग्रन्थों की ओर से हटा कर आर्ष ग्रन्थों की ओर आकर्षित किया। उस प्रज्ञाचक्षु संन्यासी ने यह समझ लिया था कि वैदिक काल के बाद के ब्राह्मण और पुरोहित वर्ग ने स्वार्थवश और शक्ति की प्रतिद्वंद्विता में शुद्ध आर्षग्रन्थों की मनमानी, टीकाएँ और व्याख्याएँ की हैं, अनेक समानान्तर ग्रन्थों की रचना की है। इन संहिताओं, स्मृतियों, उपनिषदों और पुराणों में अपने स्वार्थ–सिद्धि के नियमों और , सिद्धान्तों का समाहार किया। इतना ही नहीं, मनमाने ढंग से आर्ष ग्रन्थों में प्रक्षेप भी किये गये। इसलिए उन्होंने दयानन्द जी को विदा देते समय यही गुरु–दक्षिणा माँगी कि भारतीय संस्कृति के ऊर्जस्वी स्रोतों का आर्षग्रन्थों में अनुसन्धान करके भारतीय जन–समाज को पुनः आन्दोलित और गतिशील करो।

इस दिशा को पाकर दयानन्द जी ने भारतीय समाज के पुनर्जागरण का जो मार्ग प्रशस्त किया है, और उसके लिए जिन सिद्धान्तों और मूल्यों की विवेचना–स्थापना की है, वे उनकी दिव्य दृष्टि के परिचायक हैं। उन्होंने भारतीय समाज का यथार्थ साक्षात्कार किया, उसकी दीनावस्था के ऐतिहासिक–सांस्कृतिक कारणों का वैज्ञानिक विवेचन किया और अपने युगीन परिवेश के अनुकूल समाज की नई रचना के लिए मार्ग दिखाया। क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय समाज से अपना तादात्म्य स्थापित किया था, इस समाज की पहचान उनकी सही थी।

उन्होंने पूरी आत्मीय संवेदना के साथ अपने समाज की पीड़ा–व्यथा को ग्रहण किया था, अतः उनमें समाज के प्रति गहरा आन्तरिक भाव था, उसके उद्धार के लिए जीवन भर वे पूरी तन्मयता के साथ लगे रहे।

दयानन्द जी ने बार–बार अनेक अवसरों पर घोषित किया है कि अपने समाज के उत्थान और सेवा कार्य के सम्मुख वे अपने निजी आत्मोद्धार और मोक्ष को कुछ भी महत्त्व नहीं देते। इस कार्य को वे अगले जन्मों के लिए स्थगित कर सकते हैं, पर उनका जीवन पूर्णतः अपने समाज के लिए उत्सर्ग है। उनका जीवन और अन्त में मृत्यु भी इसका प्रमाण है। उनके सामने एक मात्र लक्ष्य था – भारतीय समाज का उत्थान, भारतीय मानस की मुक्ति।

****

साभार –
लेखक – डॉ रघुवंश (पुनरुत्थान युग का द्रष्टा : दयानन्द।)

धर्म निरपेक्ष राज्य वर्ण/जाति विहीन हिन्दू जाति

– ✍ आचार्य ओम प्रकाश

वेद की आज्ञा का उलंघन करने वाली और संगठन विहीन कोई जाति किस प्रकार अपना सर्वस्व खोकर भी सोती रहती है, यदि विश्व में कोई है तो उसका नाम है हिन्दू जाति। हिन्दुओं (आर्यों) की लम्बी दासता की मनहूस गाथाओं का इतिहास कई तरह की वेदनाओं और दुश्चिन्ताओं से भरा हुआ है। हिन्दू ही विश्व में एक जाति है जो आज तक अपने अतीत से कुछ सीखा नहीं और कुछ नया निर्माण किया नहीं। यदि उन्नसवीं सदी में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव न हुआ होता तो भारत ब्रिटिश क्रूर शासन से स्वतन्त्र भी न होता। बिडम्बना ही कही जाएगी कि स्वतन्त्रता के मात्र सत्तर वर्षों में हिन्दू पुनः पराभव की ओर बढ़ता जा रहा है और इस पराभव को आँख मूदकर नज़रअंदाज करता जा रहा है। जिस जाति में विश्व को ज्ञान–विज्ञान देने वाले अनेक वैज्ञानिक (ऋषि–मुनि) पैदा हुए उस जाति की यह दशा? जिस जाति ने वेद शास्त्रों के द्वारा विश्व को जीवन जीना सिखाया और उन्नति का मार्ग दिखाया, उसकी दशा क्यों निरन्तर अधोगामी होती जा रही है? अब भी समय है कि हिन्दू समाज तन्द्रा छोड़कर नये तरह की परतन्त्रता को तोड़ने के लिए आगे आए, वरना पिछले एक हजार वर्षों की परतन्त्रता से भी अधिक भयावह परतन्त्रता को पुनः स्वीकारने के लिए तैयार रहे।

इस वर्ष 15 अगस्त से भारतीय लोकतन्त्र अपना अमृत महोत्सव मना रहा है। उन भारत के वीर योद्धाओं का स्मरण कर रहा है जिनके अतिशय त्याग, बलिदान और समर्पण से स्वतन्त्रता की सुबह हुई। लेकिन उस दिन की प्रतीक्षा है जब भारतीय समाज अपनी जातिगत रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखण्डों और गंदी प्रथाओं से मुक्त होकर वैदिक धर्म–पथ पर आरूढ़ होकर अपने पुरातन वैभव और स्वाभिमान को प्राप्त कर लेगा। भारत की मुगली और ईसाई पराधीनता के लगभग एक हजार वर्ष रहे हैं। इतने लम्बे समय में हिन्दुओं का हर प्रकार से पराभव हुआ। जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू (आर्य) जाति ने अपना सर्वस्व खो दिया। स्मरण रहे, जो जाति अपना सर्वस्व खो देती है उसका अपना कोई गौरव युक्त इतिहास नहीं हुआ करता। आज हम जो इतिहास पढ़ते–पढ़ाते हैं वह अंग्रेजों या अंग्रेजों के मानस पुत्रों का लिखा है जिसे पढ़कर हम स्वयं को विदेशी पाते हैं। स्वतन्त्रता के उपरान्त देश ने जैसी उन्नति करनी चाहिए वैसी नहीं की। सैकड़ों जाति व उपजाति में बटा हिन्दू समाज विश्व का सबसे अधिक असंगठित समाज है। इस असंगठन के कारण ही भारत इतने लम्बे समय तक विदेशियों का पराधीन रहा। आज भारत भले ही स्वतन्त्रता का अमृत महोत्सव मना रहा हो, लेकिन भाषाई, सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षिक गुलामी से मुक्त नहीं हो पाया है। हम भले ही उन्नति के बड़े–बड़े कशीदे गढ़े, लेकिन वास्तविकता यह है कि भारत की लगभग आधी जनसंख्या अशिक्षित है। न्याय व्यवस्था अत्यन्त लचर है और अनेक स्तरों पर सामान्य जन को अनेक प्रकार के भेदभावों का सामना करना पड़ रहा है। प्रस्तुत लेख में उन सभी संदर्भों को विद्वान् लेखक ने लेख में लिखा है जो आज भी समाज और देश के लिए घातक हैं। एक मौलिक चिन्तन लेख में दिया है उस चिन्तन से पाठकगण कितना सहमत और असहमत हैं, यह तो उनकी प्रतिक्रियाओं से पता चलेगा। आचार्य ओम प्रकाश जी (प्रधान आर्य समाज मयूर विहार फेज –1) द्वारा लिखित यह लेख कई दृष्टियों से उपयोगी जान पड़ता है। लेख का वाचन करते समय पाठकों से अपेक्षा है कि वे अपनी धारणाओं व मान्यताओं से ऊपर उठकर लेख पढ़ें।

– सम्पादक

भारत वर्ष एक विशाल जनसंचार वाला देश है। यहाँ 28 राज्यों के 640 जिलों में 13 करोड़ से अधिक जनसंख्या निवास करती है। पंथ निरपेक्ष राज्य की स्थापना भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक मुसलिम काल के धार्मिक राज्य तथा ब्रिटिश शासन काल की धर्म–विभेद की नीति के शासन में धर्म को प्रमुख स्थान दिया गया था। संविधान के निर्माता इस तथ्य से परिचित थे कि

धार्मिक विभेद ने देश की एकता को काफी धक्का पहुँचाया है तथा नये प्रजातंत्र की नींव अल्पसंख्यकों के विश्वास पर ही है। अतः उन्होंने परम्परा के विरुद्ध एक पंथ निरेपेक्ष राज्य की नींव डाली। एक धर्म विरोधी न अधार्मिक / हिन्दू केन्द्र बिल 1951 पर बोलते हुए संविधान निर्माता डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने कहा था कि धर्म निरपेक्ष राज्य का अभिप्राय यह नहीं है कि लोगों के धार्मिक भावनाओं का ख्याल ही नहीं किया जाएगा। इसका अर्थ सिर्फ यह होगा कि संसद को जनता पर किसी विशेष धर्म को लादने की शक्ति नहीं होगी। य़द्यपि संविधान में भारतीय गणतंत्र को कहीं भी धर्म–निरपेक्ष राज्य नहीं कहा गया है। प्रस्तावना में सभी नापरिकों को धर्म, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता दी गई है। मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत यह कहा गया है कि नागरिकों के बीच राज्य धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इसमें से किसी आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा। धर्म निरपेक्षता का अर्थ धर्म–विरोधी नहीं। बल्कि धार्मिक तटस्थता है। अल्पसंख्यकों की रक्षा एक धर्म–विशेष निरपेक्ष राज्य में सम्भव है। भारत हिन्दू बहुल राष्ट्र है, मुसलिम ईसाई पारसी आदि धर्मावलम्बियों के हाथ हिन्दू के मन–मस्तिष्क में धर्म के आधार पर किसी प्रकार का मनुष्यता से हीन आचरण करने की मानना नहीं आदि। वस्तुतः भारत एक पंथ निरपेक्ष देश इस लिए नहीं है कि हमारे संविधान में कहीं ऐसा लिखा हुआ है, बल्कि इसलिए है कि अधिकांश हिन्दू सर्व धर्म समभाव में विश्वास रखते हैं। परन्तु जब लम्बे समय तक बहुसंख्यक भावनाओं की अनदेखी कर उन्हें हाशिये पर रखेंगे तो उसकी कुछ प्रतिक्रिया तो होगी ही।

पिछले दिनों श्री जावेद अख्तर जो कि हिन्दी सिनेमा के ख्यातनामा लेखक और गीतकार हैं उन्होंने भी अफगानिस्तान पर कब्जा करने वाले तालिबान से तुलना की कि इस देश के कट्टर हिन्दू इसे तालिबान बनाना चाहते हैं। और उनके इस पहले दिये गये बयान से आंशिक रूप से सहमत हुआ जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका आरोप इस तरह के विचार रखने वाले कट्टर हिन्दुओं से है जो अल्पसंख्यकों के प्रति धर्म के आधार पर हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। निश्चय ही उनका इशारा आर. एस.एस के कट्टर सोच रखने वाले हिंदुओं की तरफ है। कट्टरता किसी के मन में भी नहीं होनी चाहिए। जो हिंदू अकबर, रहीम, जायसी, रसखान जैसे मुसलिम उदार मुसलिमों का नाम लेना, सुनना पसंद नहीं करते वे निश्चय ही धार्मिक रूप से सहिष्णु नहीं हैं। अथवा उन्हें विदित नहीं होता कि अकबर एक मुसलिम शासक अवश्य था, परन्तु उसने हिंदू प्रजा को सताया नहीं ,बल्कि उन पर जो जजिया कर लगा हुआ था और जिससे दस दस हजार रुपये सालाना राजकोष में जमा होते थे, उसे शासन पर आरूढ़ होते ही हटा दिया था। उसने अपनी पटरानी और मुगलवंश को भावी सम्राट देने वाली संतान सलीम को जन्म देने वाली जोधाबाई को हिंदू रीति–रिवाज से पूजा–अर्चना करने की छूट दी थी, जिससे दीन–ए–इलाही धर्म चलाया, परन्तु अपने मंत्री वीरबल स्व. महेश दास और टोडरमल को उसका अनुयायी बनने को बाध्य नहीं किया था। रसखान जिस कवि ने कृष्ण बाल लीला का वर्णन करते हुए लिखा कि काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथों से ले गया माखन रोटी। क्या उसे केवल इस आधार पर तिरस्कार करेंगे कि वह कवि जन्म से मुसलमान था? कवि रहीम श्रीराम का स्मण अपने एक दोहे में आराध्य के रूप में करते हैं। तो मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने की दृष्टि जिसे भी प्राप्त है, वह एक श्रेष्ठ मानव है। वह आदर का पात्र है।

यह तो संयोग की बात होती है कि हिंदू अथवा मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि में से किस धर्म में उसका जन्म हुआ है। हाँ, जो दारुल–हरब के नाम पर सारे संसार को इस्लाम के झण्डे **के** नीचे लाने का सपना देखते हैं जैसा कि तालिबान और आतंकवादी संगठन देख रहे हैं, वे मानवता के दुश्मन हैं और उनका संगठित विरोध होना आवश्यक है ताकि मानवता को बचाया जा सके। सौदा नाम के एक शायर ने लिखा है –

अगर दिल में हो कोशिश खुरासान की सौदा।
सिजदा न करूं नापाक हिंद की ज़मी पर।।

इस तरह की सोच रखने वाले भारतीय संविधान में धारा 30 की आड़ में अल्पसंख्यकों को मिले अधिकार का नाज़ायज फायदा उठाते हैं। उक्त धारा के अन्तर्गत उन्हें यह अधिकार दिया गया है कि वे अपनी

शिक्षण संस्थायें अपने धर्म के अनुसार चला सकते हैं। इसी तरह धारा 25 (ए) में विभिन्न समुदायों के अनुयायिओं को अपने धर्म का प्रचार करने का अधिकार दिया गया है। मुसलिम मौलवी और ईसाई पादरी हिंदू धर्म की भोली–भाली जनता को प्रलोभन देकर सैकड़ों वर्षों से अपने धर्म में मिलाने और अपनी जन संख्या केंन्द्र में सन् 2014 के बाद जब भाजपा सरकार आई तो इस सरकार का ध्यान इन धर्मावलम्बियों की कारगुजारियों की ओर गया। और अंकुश लगाना प्रारम्भ किया। बस केंन्द्र की भाजपा सरकार पर आरोप लगने लगे कि यह सरकार हिन्दुत्व को लाना चाहती है। हिन्दुत्व अपने मूल रूप में मानवतावाद है। भाजपा की राष्ट्रवादी सोच को हिन्दूवादी साम्रदायिकतावादी सोच कहकर बदनाम किया जाने लगा। सब भलीभाँति जानते हैं कि मुसलिम और ईसाई धार्मिक नेता येन केन प्रकारेण भारत में अपने मतावलम्बियों की संख्या बढ़ाने में लगे है। लव–जिहाद उनमें से एक है। ईसाई मिशनरी हिन्दू धर्म के कमजोर वर्गों अनुसूचित जातियों जनजातियों में अपने धर्म का प्रचार करके विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर हिन्दू देवी–देवताओं की खिल्ली उड़ाकर और उन्हें यह आश्वासन देकर कि प्रभु की शरण में एक बार आ जाये । वे उनके सारे कष्टों का निवारण कर देंगे। ब्रिटिशकाल से है, सैकड़ों वर्षों से ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण के एजंडे पर सुनियोजित ढंग से चुपचाप अपना कार्य करने में लगे है। केन्द्र सरकार ने इस ओर ध्यान देना शुरू किया है। इस पर रोक लगानी शुरू की है तो मुसलिम नेता और मौलवी कहते हैं कि इस्लाम खतरे में है। ईसाई इसे संविधान में दिए गये अधिकार पर हमला बताते हैं। इतना ही नहीं, वे प्रचार करते हैं कि दलितों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं। दिल्ली के प्रधान पादरी अनिल काउटो ने अपने पत्रों में कहा था कि चर्च, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता खतरे में है। आपातकाल के समय संविधान में 42वें संशोधन के अन्तर्गत 'सेकुलर' शब्द जोड़ा गया। परन्तु इस शब्द के जुड़ने से पहले भी भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र था। भारत आज पंथनिरेपेक्ष और सहिष्णु है तो वह अपनी कालजयी सनातन संस्कृति और सहिष्णुता के कारण है, बहुलतावादी दर्शन के कारण है। ईसाई मिशनरी और चर्चों की अनैतिक गतिविधियों को लेकर अप्रैल 1955 में मध्यप्रदेश की तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने पूर्व न्यायाधीश भवानीशंकर नियोगी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया था जिसे धर्मान्तरण पर कानूनी रूप से प्रतिबंध की अनुशंसा की थी। भारत को खतरा हिन्दूधर्म के कारण नहीं बल्कि इस्लामी कट्टरता, आतंकवाद, चर्चों द्वारा पैसे डालर के बल पर भारत को ईसाई बनाने के षड्यंत्र से है। कांग्रेस सरकार प्रारम्भ से ही मुसलिम परस्त रही है, जिसका खामियाजा भारत भुगत रहा है। इसीलिए केन्द्र की भाजपा सरकार समान आचार–नागरिक संहिता लाने का विचार रखती है जिसका समर्थन भारत का प्रत्येक वह नागरिक करेगा जिसे समानता, समरसता और सबके लिये एक जैसा नियम–कानून पर विश्वास है। धर्म निरपेक्षता का यह अर्थ कदापि नहीं है कि इस राष्ट्र के किसी भी नागरिक को उसके धर्म विशेष के नाम पर मनमानी करने की छूट है, धर्मपरिवर्तन का षड्यंत्र करते रहने की छूट है। उम्मीद से पहले लम्बे समय तक यह होता रहा है। यदि इस ओर उचित ध्यान दिया जाता तो पूर्वोत्तर भारत में बसने वाली जनजातियों का धर्मांतरण नहीं होने पाता।

जाति विहीन बने हिन्दू जाति, चेत जाय

हिन्दू जाति चार वर्णों में विभाजित है–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चारों वर्णों की अनेक उपजातियाँ हैं जिनकी संख्या एक अनुमान के अनुसार छः हजार से अधिक है। परम्परा से ब्राह्मण सबसे बड़ी जाति मानी जाती है, फिर क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियाँ हैं। पहली तीन जातियों को सवर्ण जाति कहा जाता है। चौथी जाति शूद्र जाति पिछले कई हजार वर्ष से तिरस्कृत जाति है। हालांकि शूद्र शब्द का वह अर्थ वैदिक परम्परा में नहीं था जो कालान्तर में रूढ़ि बन गया है। जैसा कि मनुस्मृति में भी आचार्य मनु कहते हैं–''जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विजः भवेत्।' अर्थात् जन्म से सब शूद्र पैदा होते हैं, व्यक्ति कर्म, स्वभाव व गुण से 'द्विज' बनता है। संस्कृत 'द्विज' शब्द का अर्थ है जिसका दूसरा जन्म हो गया है, एक बार माता की कुक्षि से, फिर गुरुकुल में विद्याध्ययन करके गुरु दीक्षा लेकर स्नातक बनाकर। जो पढ़ाकर भी नहीं पढ़ सका वह शूद्र रह गया, उसका दूसरा जन्म नहीं हो सका। अपनी अजीविका

वह बाकी तीन वर्णों की सेवा करके चलाकर करता था। परन्तु धीरे–धीरे वर्णों को जाति में परिवर्तित कर दिया गया। जिसने जिस जाति में जन्म ले लिया, वही उसके वर्ण हो गया। और चारों वर्णों के लिये, उनके कर्म भी नियत कर दिये गये थे। वर्तमान में कर्मों का वर्ण के अनुसार ही करने का बंधन तो नहीं रह गया है, सभी वर्ण सभी कर्मों, व्यवसायों को करने के लिये स्वतंत्र है और जाति के बंधन भी ढीले पड़ रहे हैं। सवर्ण बहुसंख्यक हिन्दू के सामूहिक अवचेतन में परिवर्तन दिखाई देता है कि अन्तर्जातीय प्रेम विवाह प्रलन में आ गये हैं और माता–पिता तथा अभिभावकों द्वारा वे स्वीकार भी कर लिये जाते हैं। आज का समाज साक्षर तो लगभग सारा समाज है। सब पढ़े–लिखे होते हैं, समझने लगे हैं कि परमात्मा ने चेतन सृष्टि में जो कि तीन प्रकार की है–अण्डज, स्वेदज और जरायुज (झिल्ली से पैदा होने वाले जीव) केवल स्त्री और पुरुष अथवा नर और मादा को उत्पन्न किया है। मनुष्यकृत भेद कोई महत्त्व नहीं रखते। लेकिन हिन्दू जाति जाति भेद की दृष्टि से अभिशप्त जीवन अभी तक बिताने को मजबूर है। हिन्दू जाति का चौथा वर्ण जिसकी संज्ञा मूलतः शूद्र जाति की है, उत्तर वैदिक काल(यह विभाजन विदेशी विद्वानों ने सरारतवश किया, जो महर्षि दयानंद की दृष्टि में अमान्य है–सम्पादक) के बाद जो जाति के प्रति तिरस्कार अथवा मन में हीन भावना रखने का समय के साथ बढ़ती गई, वह दूर होने में नहीं आ रही है और प्राचीन वर्ण व्यवस्था हिन्दू जाति के लिए एक प्रकार से मरण, व्यवस्था बन गई है। भारत देश हिन्दू बहुल देश है, विधर्मी कोशिश में हैं कि उनकी जनसंख्या हिन्दुओं के धर्मान्तरण से बढ़ती जाए और पुनः इस राष्ट्र पर मुसलिम शासन करे और पूरे भारत को दारुल–इस्लाम में बदल दिया जाये। ईसाई भी सक्रिय हैं। पूरा केरल और पूर्वोत्तर के राज्य ईसाई बहुल बन गए हैं। आज उनका धर्म ईसाई है और भाषा अंग्रेजी तथा लिपि रोमन। हमें ध्यान रखना चाहिए कि धर्मान्तरण का कार्य एक प्रकार से राष्ट्रान्तरण का ही भाई है।

हिन्दुओं का बुद्धिजीवी समाज इस तथ्य को बहुत पहले से समझता रहा है और आगाह भी करता रहा है, परन्तु हिन्दू का चौथे वर्ण शूद्र के प्रति नजरिया अभिशाप के कारण बदल नहीं रहा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के कांग्रेस के गर्म दल के नेता पंजाब केसरी लाला राजपत राय ने सन् 1928 में आगरा में हुए एक सम्मेलन में कहा था कि हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था धर्म और जाति दोनों दृष्टियों से अत्यन्त हानिकारक है और असामयिक भूल है तथा इसे यथाशीघ्र नष्ट करना चाहिए। लेकिन उस महान् चिन्तक और राष्ट्रवादी नेता के कथन पर कितना ध्यान दिया गया? इसी तरह महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने 'तुम्हारी जाति की क्षय' नामक निबन्ध में जाति को समाप्त करने के प्रति आगाह किया है।

महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता निवारण के लिए तो अजीवन संघर्ष किया, उनके प्रमुख कार्यों हिन्दू जाति को इस कलंक से मुक्त करना भी शामिल था, परन्तु महात्माजी जाति को समाप्त करने की बात नहीं कर सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती का समय सामाजिक सुधारों का जन्मकाल था और पौराणिकता उस समय जरा भी झुकने को तैयार नहीं थी, परन्तु स्वामीजी ने अपने समय के महान् समाज सुधारक भी थे। प्रवास के दौरान उन्होंने तत्कालीन गवर्नर से छुआछूत को मिटाने के लिए कानून बना देने की सलाह दी थी। जिसे चालाक और समझदार अंग्रेज अधिकारी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि सरकार धार्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर हिन्दू धर्म से जाति को समाप्त करने की लालसा लेकर ही इस संसार से विदा हुए। उन्होंने हिन्दू धर्म की जाति व्यवस्था को लाइलाज समझकर अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध मत अपना लिया था। बौद्धमत हिन्दू धर्म का ही परिस्कार था। कोई नया धर्म चलाने का बुद्ध का उद्देश्य नहीं था। 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक चर्चित ग्रंथ में महाकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है कि बुद्ध ने तो सनातन वैदिक धर्म में समय के साथ घर कर गई विकृतियों को दूर करने का प्रयास किया था जिसका ब्राह्मण वर्ग ने अपने स्वार्थ के लिए विरोध किया था और शूद्र के सुधारवादी विचारों का भारत में प्रसारित नहीं होने दिया था। हिन्दू जाति का बहुसंख्यक वर्ग अथवा जिसे सवर्ण जातियां कहा जाता है, उनके मन–मस्तिष्क में इस व्यवस्था से छुटकारा पाने का विचार आ जाए और

यह सत्य समझ में आ जाए कि जातिवाद और रूढ़ियों ने मानवता के साथ अत्याचार करने का तो काम किया है, इसे बनाए रखने से गुण और योग्यता की समुद्र में पहिचान नहीं होने पाती, इसे बनाए रखने से भारत पुनः गुलाम हो सकता है, फिर न चोटी रहेगी, न जनेऊ रहेगा, मन्दिरों को ध्वस्त किया जाएगा तथा हिन्दू धर्म व जाति का नामोनिशान मिटाने के विधर्मियों के मनसूबे पूरे होंगे। भारत की बहुसंख्यक जनता अभी हिन्दू है और उसके हाथ में है कि विधर्मियों के मन्सूबे पर पानी फेरने का काम युद्ध स्तर पर करे। इस कार्य में प्रधानमन्त्री मोदी का साथ दें। भारत हिन्दू राष्ट्र बना रहेगा तो उसका धर्म निरपेक्ष स्वरूप नष्ट नहीं होगा और हिन्दुओं का समस्त उप जातियों को समाप्त कर केवल एक जातिव्यवस्था रह जाएगी। हिन्दू जाति है तो हिन्दू बना रहेगा। यदि ऐसा कर सकेंगे जो कि सम्भव नहीं है, केवल विचार करने की बात है, तो भारत, भारत रहेगा और संसार को विश्व बन्धुत्व और मानवता का संदेश वाहक पुनः बन सकेगा।

भगवान् और विज्ञान

1970 के समय तिरुवनंतपुरम में समुद्र के पास एक बुजुर्ग भगवद्गीता पढ़ रहे थे। तभी एक नास्तिक और होनहार नौजवान उनके पास आकर बैठा, उसने उन पर कटाक्ष किया कि लोग भी कितने मूर्ख है विज्ञान के युग मे गीता जैसी ओल्ड फैशन्ड बुक पढ़ रहे है।

उसने उन सज्जन से कहा कि आप यदि यही समय विज्ञान को दे देते तो अब तक देश ना जाने कहाँ पहुँच चुका होता, उन सज्जन ने उस नौजवान से परिचय पूछा तो उसने बताया कि वो कोलकाता से है और विज्ञान की पढ़ाई की है अब यहाँ भाभा परमाणु अनुसंधान में अपना कैरियर बनाने आया है।

आगे उसने कहा कि आप भी थोड़ा ध्यान वैज्ञानिक कार्यो में लगाये भगवद्गीता पढ़ते रहने से आप कुछ हासिल नही कर सकोगे।

सज्जन मुस्कुराते हुए जाने के लिये उठे, उनका उठना था की 4 सुरक्षाकर्मी वहाँ उनके आसपास आ गए, आगे ड्राइवर ने कार लगा दी जिस पर लाल बत्ती लगी थी। लड़का घबराया और उसने उनसे पूछा "आप कौन है?

उन सज्जन ने अपना नाम बताया 'विक्रम साराभाई' जिस भाभा परमाणु अनुसंधान में लड़का अपना कैरियर बनाने आया था उसके अध्यक्ष वही थे।

उस समय विक्रम साराभाई के नाम पर 13 अनुसंधान केंद्र थे, साथ ही साराभाई को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने परमाणु योजना का अध्यक्ष भी नियुक्त किया था।

अब शर्मसार होने की बारी लड़के की थी वो साराभाई के चरणों मे रोते हुए गिर पड़ा। तब साराभाई ने बहुत अच्छी बात कही, उन्होंने कहा : "हर निर्माण के पीछे निर्माणकर्ता अवश्य है। इसलिए फर्क नही पड़ता ये महाभारत है या आज का भारत, ईश्वर को कभी मत भूलो।"

आज नास्तिक गण विज्ञान का नाम लेकर कितना नाच ले मगर इतिहास गवाह है कि विज्ञान ईश्वर को मानने वाले आस्तिकों ने ही रचा है, फिर चाहे वो किसी भी धर्म को मानने वाले क्यो ना हो।

रत्न आर्य समाज के

— ✍ आचार्य विश्वव्रत शास्त्री

नाम श्रद्धानन्द जिनका
शिष्य थे ऋषिराज के ।
राष्ट्र के नेता समर्पित
रत्न आर्य समाज के ।।

संकल्प ऊँचा धार करके
कांगड़ी गुरुकुल बनाया।
शुद्धि की वीणा बजाकर
धर्म वैदिक था बचाया ।।
स्वयं की सम्पत्ति, सन्तति
दे दिया था राष्ट्र के हित ।
बन उपासक वेद के नित
कर लिया सबको समाहित ।।
सीख उनसे लें न क्यों
सब आर्य नेता आज के।।
नाम श्रद्धानन्द जिनका.....

यदि चाहते हैं मान उनके
त्याग का औदार्य का ।
लोभ, लिप्सा हीन जीवन,
है उचित हर आर्य का।।
यूँ न जाने इस जगत से
लोग कितने जा रहे ।
पर कौन हैं जो बाद में
स्मृति पटल पर छा रहे ।।
शृंगार प्रस्तर त्याग शोभित
श्रेष्ठ गुण तुम साज के।
नाम श्रद्धानन्द जिनका....

धार ऋषि आदेश को तुम
देव! निश्चित तर गये।
वीर नरपुंगव महा तुम
काम अनगिन कर गये।।
मृत्यु पाई थी कि ऐसी
जो न मिलती है सभी को ।
देख, सुन अन्तिम विदायी
लोभ होता हर किसी को।।
तुम चले कल्याण पथ
रक्षक हमारी लाज के।
नाम श्रद्धानन्द जिनका.....

श्रद्धाञ्जली है सर्वमेधी
यज्ञ के यजमान तुमको।
श्रद्धाञ्जली है हिन्द हिन्दी
हिन्दुओं की शान तुमको ।।
श्रद्धाञ्जली है मन मनुज
मस्तिष्क के हे मान! तुमको।
श्रद्धाञ्जली है वेद के हित
प्राण के बलिदान तुमको।।
पूर्ण श्रद्धा से समन्वित
लाज थे तुम लाज के ।
नाम श्रद्धानन्द जिनका.....

नाम श्रद्धानन्द जिनका
शिष्य थे ऋषिराज के ।।
राष्ट्र के नेता समर्पित
रत्न आर्य समाज के ।।

आर्यसमाज के महाधन स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का आर्यसमाज के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान

– ✍ मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी दर्शनानन्द जी का आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। आपका जन्म माघ मास कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन ब्रिकमी संवत् 1918 को 158 वर्ष पूर्व लुधियाना जिले के जगरांवा कस्बे में पिता पं0 रामप्रताप शर्मा जी के यहां 160 वर्ष पूर्व हुआ था। इस वर्ष आपकी जयन्ती 27 जनवरी को है। स्वामी दर्शनानन्द जी की माता का नाम हीरा देवी था। जन्म के समय स्वामी जी का नाम नेतराम रखा गया। आपके पितामह व प्रपितामह द्वारा बाद में आपका नाम बदल कर कृपाराम रख दिया गया। आपकी एक बड़ी बहिन कृष्णा जी थी तथा तीन अनुज पं0 कर्त्ता राम शर्मा, पं0 रामजी दास शर्मा तथा पं0 मुनिश्वर शर्मा थे। स्वामी जी की मिडल तक की शिक्षा फिरोजपुर में अपने मामा जी के यहां पर हुई। आपका विवाह पिता पं0 रामप्रताप जी ने कुल परम्परा के अनुसार 11 वर्ष की आयु में ही अमृतसर के एक कस्बे वीरवाल के निवासी पं0 सुन्दरदास जी की सुपुत्री पार्वती देवी के साथ सम्वत् 1929 में सम्पन्न करा दिया था। बचपन में स्वामी जी को पठन–पाठन सहित खेल–कूद, व्यायाम तथा पतंग उड़ाने का शौक था। स्वामी जी का एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम नृसिंह रखा गया था।

स्वामी जी धर्म के विषय में चिन्तन मनन करते रहते थे। इन्हीं दिनों वह वेदान्ती बन गये। वेदान्त से प्रभावित पं0 कृपाराम जी विरक्त हो गये और गृहस्थ का त्याग कर एक वेदान्ती का वैराग्यपूर्ण जीवन बिताने लगे। पं0 कृपाराम जी ने हिमाचल प्रदेश की कुल्लु घाटी में प्रथमवार संन्यास लिया था। उन्होंने 18 जून सन् 1878 को अमृतसर में सरदार भगवान सिंह जी के गृह पर पौराणिक विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ के अवसर पर ऋषि दयानन्द के साक्षात दर्शन किये थे। इस शास्त्रार्थ में पौराणिकों के लाये गये बालक व युवकों ने स्वामी जी पर पत्थर व ईंटों का प्रहार किया था। एक ईंट का टुकड़ा पं0 कृपाराम जी के पैर में भी लगा था जिसके घाव का निशान जीवन भर बना रहा। पं0 कृपाराम जी यदा–कदा अपने मित्रों को यह निशान दिखाया करते थे। पं0 कृपाराम जी ने इन्हीं दिनों पंजाब के कुछ स्थानों पर ऋषि दयानन्द के लगभग 37 व्याख्यान सुने। इसके प्रभाव से आप वेदान्त मत की विचारधारा का त्याग कर ऋषि दयानन्द के वेदानुयायी भक्त बने। पं0 कृपाराम जी आरम्भ में स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ करने के इरादे से उनके पास गये थे परन्तु वहां स्वामी दयानन्द जी का व्याख्यान सुन कर उनको शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं पड़ी थी और वह वैदिक धर्म के अनुयायी बन गये। पं0 कृपाराम जी की जीवनी पढ़कर यह भी विदित होता है कि उनके पं0 लेखराम आर्य–मुसाफिर से गहरे मैत्रीपूर्ण व आत्मीय सम्बन्ध थे। पं0 कृपाराम जी ने अपने परिवार के साथ जगरावां में रहते हुए ही घर पर एक संस्कृत की पाठशाला खोली थी। उनकी प्रेरणा से पिता पं0 रामप्रताप जी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ कर वैदिक धर्मी बन गये थे। आपके चाचा जी सहित कुछ परिवारजन आर्यसमाजी बने थे।

दिनांक 30 अक्टूबर सन् 1883 को ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ था। पं0 कृपाराम जी ने महाप्रयाण की इस घटना के पश्चात कुछ लघु ग्रन्थों का प्रकाशन किया। उन्होंने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का वितरण भी किया। आपने स्थान–स्थान पर जाकर मौखिक प्रचार किया। पं0 कृपाराम जी ने अपने ग्राम जगरांवा में वेद प्रचार के लिये अपने व्यय से एक प्रचारक रखा था। काशी में रहते हुए पं0 कृपाराम जी के पितामह की मृत्यु हुई। आपने उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति से कर एक इतिहास रचा। उन दिनों वैदिक रीति से अन्त्येष्टि करना सामाजिक बहिष्कार को आमंत्रण देना होता था। पं0 कृपाराम जी ने इसी अवसर पर 'तिमिरनाशक' साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन भी आरम्भ किया था। काशी में रहते हुए आपका भाद्रपद के शुक्लपक्ष की चतुर्थी, विक्रमी संवत् 1946 को देवता विषय पर काशी के लगभग एक सौ पण्डितों से शास्त्रार्थ हुआ। पण्डितों का नेतृत्व पं0 शिवकुमार शास्त्री जी ने किया था। इसमें काशी के

पण्डितों की पराजय हुई थी। पं0 जी का तिमिरनाशक प्रैस काशी विश्वनाथ मन्दिर के समीप था। वहां आर्यसमाज और एक संस्कृत पाठशाला का संचालन भी पं0 कृपाराम जी द्वारा किया जाता था। पाठशाला में तीन अध्यापक रखे गये थे। आर्यसमाज में पं0 शिवशंकर शर्मा का नाम अमर है। आप पं0 कृपाराम जी की ही देन थे। पं0 शिवशंकर शर्मा जी पं0 कृपाराम जी के काशी के पंडितों के साथ शास्त्रार्थ में तर्क व युक्तियों से प्रभावित होकर आर्यसमाज के अनुयायी व ऋषिभक्त बने थे।

आचार्य नरदेव शास्त्री आर्यसमाज बच्छोवाली के सन् 1894 के उत्सव में पं0 कृपाराम जी के उपदेशों से प्रभावित होकर आर्यसमाज के अनुयायी बने थे। एक प्रतिभाशाली युवक को आर्यसमाज का सहयोगी बनाना पं0 कृपाराम जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व व कृतित्व का ही परिणाम था। पं0 नरदेव शास्त्री के आचार्यात्व में गुरुकुल महाविद्यालय ने अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। पं0 कृपाराम जी पंजाब के आर्यसमाजों में अनेक अवसरों पर पं0 लेखराम जी के साथ उपस्थित हुए थे। दोनों विद्वानों में परस्पर गहरी आत्मीयता थी। पं0 कृपाराम जी ने अनेक पौराणिक विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किये जिसमें सामान्य जन सम्मिलित होते थे। इसमें आर्यसमाज के पक्ष की विजय से प्रभावित होकर अनेक लोग आर्यसमाज की विचारधारा को ग्रहण कर आर्यसमाजी बनते थे।

मालेरकोटला पंजाब में लुधियाना के निकट है। यह मुस्लिम रियासत थी। यहां सन् 1895 में आर्यसमाज के उत्सव में स्वामी श्रद्धानन्द, पं0 लेखराम जी तथा स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी पहुंचे थे। इस उत्सव में इन तीन विभूतियों के वहां के लोगों को एक साथ दर्शन होने से सुखद आश्चर्य हुआ था। इन विद्वानों के वहां व्याख्यान भी हुए। पं0 कृपाराम जी आर्यसमाज लुधियाना के प्रधान भी रहे। इस समाज में भी स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी दर्शनानन्द जी के एक ही दिन प्रवचन हुए थे। हम अनुमान लगा सकते हैं कि आर्यसमाज के अनुयायियों के लिए वह दृश्य स्वर्ग के समान सुखद रहा होगा। स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रचार की सर्वत्र धूम थी। वह पंजाब के अनेक आर्यसमाजों में उत्सवों पर वेद प्रचार के लिये जाते थे। यह भी बता दें कि पंडित कृपाराम जी तेज गति से व्याख्यान देते थे। उनके व्याख्यान में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता होती थी। पंडित जी ने सन् 1898 में धामपुर में आर्यसमाज की स्थापना भी की थी। पं0 जी ने एक ट्रैक्ट 'हम निर्बल क्यों?' सन् 1900 में लिखा था। आपने आगरा में 'धर्मसभा से प्रश्न' शीर्षक से एक ट्रैक्ट भी लिखा था जिसमें पौराणिकों से 64 प्रश्न किये गये थे। आपके बारे में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन एक ट्रैक्ट लिखा करते थे। आपके ट्रैक्ट का एक संग्रह स्वामी जगरीश्वरानन्द सरस्वती, दिल्ली ने कुछ वर्ष पहले प्रकाशित किया था। यह ग्रन्थ वर्तमान समय में भी इसके प्रकाशक एवं आर्य पुस्तक विक्रेताओं से उपलब्ध है। स्वामी जी आर्यसमाज में आने से पहले वेदान्ती थे। तब आपने संन्यास लेकर साधु नित्यानन्द नाम धारण किया था। आर्यसमाजी बनने पर यह साधुत्व वा संन्यास अप्रभावी हो गया था। आपने सन् 1901 में पुनः संन्यास लेकर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती नाम धारण किया था। स्वामी जी हिन्दी व उर्दू के कवि भी थे। आप हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अरबी व फारसी भाषाओं के विद्वान थे। हिन्दी व उर्दू में आपने अनेक कवितायें व गीत लिखे हैं। स्वामी जी पर दो बार न्यायालय में अभियोग भी चले।

स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपने जीवन में अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। सन् 1899 में स्वामी जी ने गुरुकुल सिकन्दराबाद, जनपद बुलन्दशहर की स्थापना की थी। स्वामी जी ने एक गुरुकुल बदायूं के सूर्यकुण्ड क्षेत्र में तपोभूमि गुरुकुल के नाम से सन् 1903 में स्थापित किया था। इस गुरुकुल का अपना बड़ा भवन आरम्भ के दो तीन वर्षों में बनकर तैयार हो गया था। सन् 1906 में इस गुरुकुल में 60 ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। सन् 1905 में स्वामी जी ने गुरुकुल विरालसी की स्थापना की थी। इस गुरुकुल ने भी अपने आरम्भिक दिनों में प्रशंसनीय उन्नति की और आर्यसमाज को अच्छे विद्वान मिले। स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित सबसे प्रसिद्ध गुरुकुल 'गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर' है। सम्वत् 1964 में गंगा के तट पर इस गुरुकुल की स्थापना की गई थी। पं0 गंगादत्त जी, पं0 भीमसेन जी तथा आचार्य नरदेव शास्त्री जी ने आरम्भ में ही इस गुरुकुल के लिये अपनी सेवायें प्रदान की थी। कुछ वर्ष पहले हम अपने कुछ मित्रों के साथ इस गुरुकुल के उत्सव में

सम्मिलित होने जाया करते थे।

पं0 प्रकाशवीर शास्त्री जी इस गुरुकुल के यशस्वी स्नातक रहे। आप कई बार सांसद रहे। आपने कांग्रेस के कई दिग्गज नेताओं को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़कर अपने व्यक्तित्व एवं भाषण कला में निपुणता के गुण के आधार पर हराया। हमने कई बार पं0 प्रकाशवीर शास्त्री जी के दर्शन किये। उन पर विस्तृत लेख भी लिखे। उनके अनुज भ्राता डा0 सत्यवीर त्यागी से भी हमारा सम्पर्क रहा है। पं0 प्रकाशवीर शास्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे। उन्होंने सांसद रहते हुए अनेक स्मरणीय कार्य किये। हरिद्वार में गंगा तट पर उनके द्वारा बहुमंजिला एवं होटलनुमा आर्यसमाज बनाया गया था। वेदों के अंग्रेजी भाष्य कराने व उसके प्रकाशन में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। सन् 1978 में रिवाड़ी के पास एक रेल दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई थी। मृत्यु के समय वह संसद सदस्य थे।

गुरुकुल ज्वालापुर से सन् 1909 में एक मासिक पत्र 'भारतोदय' का प्रकाशन आरम्भ किया गया था जिसके सम्पादक सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार पं0 पद्मसिंह शर्मा थे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी बड़े गौरव से कहा करते थे उनका प्रथम लेख भारतोदय पत्रिका में ही प्रकाशित हुआ था। स्वामी दर्शनानन्द जी ने रावलपिंडी के निकट मुसलिम बहुल पर्वतीय स्थान में गुरुकुल चोहाभक्तां की स्थापना की थी। इस गुरुकुल की स्थापना 22 दिसम्बर, सन् 1908 को की गई थी। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी इस गुरुकुल के आचार्य रहे। हम अनुमान भी नहीं कर सकते कि इन गुरुकुलों में 100 वर्ष पहले एक सौ से अधिक छात्र अध्ययन करते थे। इस गुरुकुल से स्वामी आत्मानन्द जी ने 'वैदिक फिलासफी' नामक एक उच्चस्तरीय मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया था। इस गुरुकुल चोहाभक्तां को ही गुरुकुल पोठोहार भी कहा जाता था। आर्यसमाज के गुरुकुल वैदिक धर्म की रक्षा व प्रचार के कार्य में शरीर में रीढ़ की हड्डी के समान रहे हैं। स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज को अनेक गुरुकुल स्थापित पर बड़ी संख्या में विद्वान दिये। वैदिक धर्म के प्रचार में स्वामी जी का योगदान अविस्मरणीय एवं अतुलनीय है।

स्वामी दर्शनानन्द जी का शरीर काम करते करते पेट के रोग से ग्रस्त हुआ। उनको आराम नहीं हो रहा था। वह दृण प्रारब्धवादी थे। ईश्वर पर विश्वास रखते थे तथा औषधियों का सेवन नहीं करते थे। वह आगरा होते हुए आर्यसमाज अजमेर के उत्सव में गये। वहां उनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया। गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर से पं0 गंगादत्त जी, पं0 नरदेव शास्त्री तथा गुरुकुल सिकन्दराबाद से पं0 मुरारीलाल शर्मा, स्वामी जी के पुत्र श्री नृसिंह शर्मा आदि अनेक लोग अजमेर पहुंचे। वहां से उन्हें स्वास्थ्य लाभ हेतु गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर लाया गया। यहां वह कुछ दिन रहे। इसके बाद पं0 मुरारी लाल शर्मा जी आपको गुरुकुल सिकन्दराबाद उपचारार्थ ले गये। इसी बीच उनके प्रिय भक्त डा0 कृष्णप्रसाद जी (हाथरस) सिकन्दराबाद पहुंचे और उन्हें अपने साथ हाथरस ले आये। वहां आर्यसमाज का उत्सव चल रहा था। आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान पं0 तुलसी राम स्वामी, पं0 घासीराम जी आदि वहां आये हुए थे। स्वामी जी की आज्ञा पर उन्हें उत्सव के पण्डाल में शय्या पर ही ले जाया गया जिससे वह अपने भक्तों से मिल सकें। शरीर छूटने में 6 घंटे थे। इस अवस्था में भी वह रुक रुक कर धीमे स्वर में बोले 'जिस किसी को भी शास्त्रार्थ करना हो, कर ले। फिर न कहना।' स्वामी जी का अन्तिम समय बहुत निकट आ गया था। अन्तिम समय में उन्होंने कहा 'भद्र पुरुषों! हमारा अन्तिम नमस्ते स्वीकार कीजिए। ऋषि दयानन्द के 37 व्याख्यान हमने सुने थे। 37 वर्ष ही कार्य किया। ईश्वर आप लोगों को साहस दे कि आप अपने धर्म को समझें।' यह कह कर उन्होंने शरीर छोड़ दिया। यह 11 मई सन् 1913 का दिन था। इस प्रकार आर्यसमाज का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र अपनी आभा बिखेर पर ईश्वर की व्यवस्था से परमगति को प्राप्त हो गया। स्वामी जी ने आर्यसमाज को अपने कार्यों से सुदृण किया व उसके यश को बढ़ाया था। आज देश, धर्म और आर्यसमाज को स्वामी दर्शनानन्द जी के समान समर्पित ऋषिभक्त विद्वानों एवं प्रचारकों की आवश्यकता है जो लेखन, व्याख्यान तथा शास्त्रार्थ आदि से वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें। इसी के साथ हम लेख को विराम देते हैं। हमने इस लेख में पं0 राजेन्द्र जिज्ञासु जी लिखित स्वामी दर्शनानन्द जी की जीवनी से सहायता ली है। उनका धन्यवाद है।

ओ३म् शम्।

साम्प्रदायिक सद्भाव, स्वाभिमान व स्वधर्म के रक्षक स्वामी श्रद्धानंद

– ✍ अखिलेश आर्येन्दु

भारतीय सनातन गौरव, संस्कृति, सदभावना, स्वाभिमान और स्वधर्म के रक्षकों में हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। वे एक ऐसे महान् राष्ट्र नायक व मानवता के रक्षक थे जिनमें निडरता, सहिष्णुता, करुणा, न्याय, पवित्रता और उदारता जैसे अनगिनत मूल्य समाहित थे। वे ऐसे स्वाभिमान, सदभाव और स्वधर्म के पुरोधा थे जिसके सामने ब्रिटिश सत्ता खुद को किंमकर्तव्यविमूढ़ की दशा में पाती थी। उनका रोम-रोम स्व-धर्म, स्व-संस्कृति, स्व-भाषा, स्व-देश और स्वाभिमान से भरा था। उन्होंने अन्याय, शोषण, गुलामी, अनैतिकता, पाखंड और अंधविश्वास का जीवन-भर निडरता और प्रखरता के साथ विरोध किया और सत्य, ज्ञान, धर्म और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने में अपना सारा जीवन लगा दिया । वैदिक धर्म और संस्कृति रक्षा परम्परा के संवाहक बनकर उन्होंने अपने देश, समाज और स्वधर्म परक कार्यों से जनमानस को देश, समाज और स्वधर्म पालन की प्रेरणा दी। भारतीयों के लिए वे ऐसे विलक्षण महामानव के रूप याद किए जाते हैं जिन्होंने बगैर किसी भेदभाव के सब के लिए कार्य किए। उनका जीवन जितना गुलामी के दिनों में प्रेरणा का जीवंत उदाहरण था वैसा आज भी है।

भारत की डावाडोल नैया के खेवैया बनकर निकले इस महाभाग का जीवन संघर्षों का पर्याय रहा, लेकिन कभी संघर्षों से डरकर भागे नहीं। दिल्ली की जामा मस्जिद की मिम्बार पर साम्प्रदायिक सद्भाव और कौमी एकता को संबल बनाने के उद्देश्य से अपने ऐतिहातिक भाषण के समय गोरखा सिपाहियों द्वारा सभा न करने की चेतावनी के बावजूद अपना भाषण दे कर यह साबित कर दिया कि देश के दुर्दिन के खात्मे के लिए जीवन की आहुति देने से बढ़कर उनके लिए दूसरा कोई सौभाग्य नहीं। गौरतलब है, उस समय का दृश्य कितना मर्मस्पर्शी रहा होगा जब वे सीना तानकर कहते हैं –लो चलाओ गोली--- मैं तैयार हूं। इस तरह की तमाम घटनाएं हैं जो एक अमर आर्य वैदिक संन्यासी के सत्साहस, अभय, पवित्रता और ईश्वर के प्रति समर्पण को याद दिलाती हैं। याद दिलाते हैं उनके शिक्षा, धर्म, विद्या, समाज व देशोपकारक के वे सभी कर्म, विचार व कर्तव्य, जो उन्होंने तब किया था जव हर तरफ देश में प्रतिकूलताएं थीं।

जंगल में मंगल की कहावत को स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और दूसरे अनेक शिक्षा संस्थानों की स्थापना करके मूर्त कर दिया। स्वामी श्रद्धानंद का स्पष्ट विचार था कि वेद केवल पढ़ने और सुनने के लिए नहीं हैं, बल्कि वे मानव जीवन, धर्म और विज्ञान के सर्वोतम मार्ग-दर्शक हैं।

पंजाब में जन्म लेने वाला एक साधारण सा बालक मुंशीराम { आगे चलकर स्वामी श्रद्धानंद के नाम से जाने गए } कुसंगति की वजह से चारित्रिक रूप से गिरा था लेकिन जब वह उठने लगता है तो उसे आश्चर्य होता है, वह कैसे इतना बदल गया कि लोगों को यकीन करना भी मुश्किल। गौरतलब है यही बदलाव मानव को महामानव बनाता है। हम स्वामी जी को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के संवाहक कहें, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक, जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रमुख है, एक महान् शिक्षाविद् कहें, धर्म-रक्षक कहें, देश की आजादी के महान् योद्धा कहें या शुद्धिकरण का अग्रदूत, कुछ भी कहें, वे सब कुछ के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ थे जिसका वर्णन दो-चार पंक्तियों में संभव ही नहीं है। उनमें देश, समाज, संस्कृति, धर्म, शिक्षा, नारी उत्थान और मजबूर मजलूमों के प्रति अखंड संवेदना तो थी ही, मानव समाज के समग्र कल्याण के सूत्र भी, जो ऋषि दयानंद से प्राप्त किए थे। वे इन्हीं मूल्यों के लिए जीवन-भर जीते रहे और समाज को मानवता की राह पर ले जाने के लिए अंतिम समय तक संघर्ष करते रहे।

स्वामी श्रद्धानंद के छोटे से जीवन में इतने कार्य कि लोग सहज विश्वास भी सहज न कर सकें। क्रांति किसे कहते हैं, यदि देखना हो तो महात्मा मुंशीराम के जीवन में हमें आकर देखना ही पड़ेंगा। उनका जीवन विविधताओं से भरा था। उन्होंने पत्रकारिता के जरिए जनजागरण, बिछुड़ों के शुद्धिकरण के माध्यम से अपनों को समाज में सम्मान जनक जगह और सम्मान दिलाने के लिए जान की बाजी लगा दी। कांग्रेस के माध्यम से देश की सेवा करने का व्रत, गांधी को महात्मा कहकर उनका सम्मान बढ़ाने की पवित्र भावना, दलितों, वंचितों, असहायों, महिलाओं और बच्चों को वैदिक शिक्षा के माध्यम से देश और समाज के लिए तैयार करने जैसे ऐतिहासिक कार्यों को हम गिनाते जाएं तो पता चलेगा, इस वैदिक मिशनरी ने कितने कार्य, एक साथ किए। ऐसे सद्संकल्प के दृढ़व्रती के जीवन में विश्राम कहीं नहीं देखने को मिलता।

पत्रकारिता और शिक्षा संस्थानों के जरिए देश, समाज और संस्कृति जागरण का माध्यम बनाने वाले महामानव श्रद्धानंद ने उस समय अंग्रेजों के छल-छद्म, क्रूरता, भेदभाव, पशुता, निर्दयता, शोषण, जुल्म, अमानवीयता और भारत को अनंत काल तक गुलाम बनाने की मंशा के विरोध में हजारों के मध्य बिना एक पल रुके ललकारते रहना, उनके साहसी स्वभाव का हिस्सा था। पत्रकारिता क्या होती है और पत्रकार व संपादक का समाज और देश के प्रति क्या दायित्व होता है, इसे हम स्वामी श्रद्धानंद की पत्रकारिता में पाते हैं। कभी अंग्रेजों से डरकर किसी भी समाज-देश विरोधी बात या कार्य एक बार भी जीवन में नहीं किए। वेद मार्ग का एक पूर्ण यज्ञीय जीवन जिया और मरे भी तो ऐसे कि महात्मा गांधी को भी सोचने को मजबूर कर दिया। सद्धर्म प्रचारक हो या शुद्धि के ऐतिहातिक कार्य , दोनों पत्रों में उन्होंने समाज और देश-हित को सर्वोपरि रखा। उनके समय में ही कांग्रेस में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति प्रारम्भ हो चुकी थी, जिसके कारण उन्हें विवश होकर कांग्रेस से अलग होना पड़ा। लेकिन उनके समाज व देश के कार्य निरंतर चलते रहे। यही कारण कांग्रेस के कुछ संकुचित दिमाग के लोग उनके कार्यों की आलोचना किया करते थे। सत्य का ग्रहण और असत्य से दूर रहने वाले इस युग-योद्धा ने जीवन में कभी असत्य से समझौता नहीं किया।

स्वामी श्रद्धानंद ने कांग्रेस छोड़ने के बाद अपना पूरा ध्यान शुद्धि आंदोलन में लगा दिए। उन्होंने शुद्धि आंदोलन के माध्यम से जबरन मुसलिम और ईसाई बने हिंदू भाइयों के पुनः हिंदू बनने का रास्ता साफ कर दिया। इससे हजारों की संख्या में लोग हिंदू बनने लगे। जिसकी सराहना मदन मोहन मालवीय, वीर सावरकर और उस समय के अनेक देश भक्तों ने की। जब देश-समाज इधर-उधर भटक रहा हो तो बांसुरी नहीं बल्कि तप और त्याग की आवश्यकता होती है। इस बात को स्वामीजी अपने पत्रों के अतिरिक्त अपने प्रवचनों और भाषणों में किया करते थे। आलस्य-प्रमाद को त्यागकर देश-समाज का हित किया जा सकता है। वे कहा करते थे- यदि देश-समाज की सेवा जीवन का उद्देश्य हो तो जीवन कितना छोटा होता है।

और शुद्धि आंदोलन, समाज सुधार, नारी – दलित उत्थान, वैदिक शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने और कौमी एकता का यह मसीहा संघर्षों से जूझता रहा।आर्यसमाज और देश के इस वैदिक मिशनरी ने समाज और मानव निर्माण के कार्यों को जीवन भर करते रहे। महर्षि दयानंद का यह शिष्य अपने गुरु की तरह सत्य और ज्ञान को जीवन का आधार बनाया। इससे तत्कालीन समाज व देश विरोयी शक्तियों को उभरने का मौका मिला । तमाम लोग सत्य और स्वधर्म पालन के विरोधी हो गए। ऐसा ही एक विरोधी अब्दुल रशीद था, जितने चांदनी चौक में एक धर्म चर्चा के बहाने 23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानंद को गोली मार दी। गोली खाकर यह महामानव हमेशा के लिए अपने अधूरे कार्यों को समेटे बिना हमारे बीच से चल बसा। ऐसे धर्म व देश रक्षक वीर बांकुरे को शत्-शत् नमन्।

विकास–पथ या विनाश–पथ ?

दुनियाभर में विकास की रफ्तार तेज करने के मद्देनजर हाइवे व बांधों का जाल बिछाया जा रहा है। अमेरिका में पिछली सदी के छठे दशक में शुरू हुआ विकास का यह मॉडल आज दुनिया भर में अपना लिया गया है। चीन और भारत जैसे देश जहाँ कभी पश्चिमी विकास के इस मॉडल का खुलकर विरोध हुआ करता था, आज इसके मुखर झंडाबरदार बने हुए हैं। गौरतलब है, विकास के इस मॉडल को अपनाने की वजह से पर्यावरण प्रदूषण, छोटे और गरीब कारोबारियों के रोजगार का नाश, सड़क दुर्घटनाओं में बढ़ोत्तरी, बेरोजगारी, गैरबराबरी, पलायन, खेती–किसानी का सर्वनाश, ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन में बढ़ोत्तरी और पेडों की बेतहांसा कटाई जैसी अनगिनत समस्याओं का जन्म हुआ।

भारत में पश्चिमी विकास के इस मॉडल को विकास के रफ्तार को तेज करने के मद्देनज़र केंद्र और राज्य सरकारें हाइवे को लगातार बढ़ावा दे रही हैं। इसके लिए किसानों के खेत अधिग्रहण किए जा रहे हैं, पेड़ काटे जा रहे हैं, पुराने हाइवे को चौड़ा किया जा रहा है जिससे इसके अगल–बगल की उर्वर भूमि की उर्वरता नष्ट हो रही है, मिट्टी का क्षरण व भूमि के कटाव की कुछ दशकों से जो समस्याएं पैदा हुई हैं, वह कृषि और किसान दोनों के लिए खतरनाक साबित हुई हैं। विकास की रफ्तार तेज करने में छोटे रेहड़ी और छोटे दुकानदारों को भी खदेड़ा जा रहा है। और लोगों को भ्रमित करने के लिए झूठे दिलासे दिए जा रहे हैं।

हाइवे के किनारे नए उद्योग धन्धे लगाने के नाम पर प्रकृति की स्वाभिकता को नष्ट किया जा रहा है। जहां कभी ध्वनि और वायु प्रदूषण नाम की कोई समस्या नहीं थी वहां नए–नए हाइवे की वजह से इन दोनों समस्याओं से लोगों को दो–चार होना पड़ रहा है। इसके अलावा क्राइम, चोरबाज़ारी, डकैती, दुर्घटनाएं और जल की निकासी की बेहतर सुविधा न होने के कारण बरसात में बाढ़ आने जैसी तमाम समस्याएं बढ़ गई हैं। नए–नए हाइवे के निर्माण से नए इंडस्ट्रियल इकोनॉमी जोन का क्षेत्रफल अलग से किसानों की जमीन पर बनाए जा रहे हैं। यह कहा जा रहा है, इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, लेकिन इससे खड़े हुए सवाल का जवाब किसी के पास नहीं है कि खेती की जो जमीन किसानों से ली गई थी और उससे जितने किसान बेरोजगार हुए, क्या उन सभी को पीढ़ी–दर–पीढ़ी नौकरी, उस इकोनॉमी जोन में मिलती रहेगी? इसका सीधा सा जवाब है बिलकुल नहीं। न तो नए इकोनॉमी जोन में सभी किसानों को रोजगार आजतक मिला है और न तो उनके परिवार के लिए कोई आर्थिक मदद ही मिलती है जिससे वे बदहाली व भुखमरी जैसी समस्याओं से बच जाएं।

उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े हाइवे गंगा एक्सप्रेस–वे का उदाहरण हमारे सामने है। इस हाइवे पर जितनी लागत आई वह अरबों में है। और जिस इंडस्ट्रियल इकोनॉमी जोन के बनाने की बात कही गई और जिन किसानों से जमीन ली गई थी उन्हें आज तक कोई मुकम्मल रोजगार सरकार नहीं दे पाई है। हजारों एकड़ में बना यह हाइवे भले ही यातायात के लिए बेहतर माना जाता हो, लेकिन इसके बनने के बाद अपराध, दुर्घटनाएं, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण, काला बाज़ारी, चोरबाज़ारी और डकैती जैसी समस्याएं आम हो गई हैं। बरसात के पानी की निकासी की जैसी व्यवस्था होनी चाहिए, नहीं हुई। यदि दो–चार दिन घनघोर बरसात हो जाए तो हाइवे के किनारे बसे सैकड़ों गांव बाढ़ के चपेट में आ जाएंगे।

भारत जैसे देश में जहाँ जल, जंगल, जमीन और वायु प्रदूषण से ताल्लुक रखने वाली समस्याएं शताब्दी पहले कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी, आज सबसे ज्यादा इन्हीं से ताल्लुक रखने वाली समस्याओं से देश के हर आदमी को दो–चार होना पड़ रहा है। बड़े शहरों में जाम की समस्या से निजात पाने के लिए ओवर ब्रिज, फ्लाईओवर, रिंग रोड, पुलों और लिंग रोड का जाल बिछाया गया है, लेकिन गांवों और छोटे कस्बों में तो

इस तरह की कोई समस्या नहीं है। हां, इतना जरूर देखने को मिल रहा है कि लोग गांवों से पलायन कर सड़कों और हाइवे के किनारे आकर बस रहे हैं। इससे कृषि पर बहुत असर पड़ रहा है। क्या हाइवे, इंडस्ट्रियल इकोनॉमी जोन गांवों के लिए मुफीद साबित हुए हैं या विनाश का कारण बन रहे हैं? हाइवे के विकास से शराब, गांजा, हिरोइन, चरस, ब्राउन शुगर जैसी अत्यंत नशे के लिए खतरनाक चीजों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने में सुगमता हुई है। भारत के ज्यादातर हाइवे ऐसे हैं जहां कई–कई किलोमीटर तक सन्नाटा होता है। इसलिए क्राइम, कालाबाज़ारी और डकैती जैसी समस्याएं हाइवे के जरिए अधिक सुगमता से होने लगी हैं। चेकपोस्ट बहुत दूर होने और चेकिंग की व्यवस्था बेहतर न होने के कारण भी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के जरिए गांव क्षेत्र को शहरी क्षेत्र में बदलने की इस कुत्सित चाल पर विराम लगाने की जरूरत है। सरकार हाइवे के जरिए कर अर्जित करना चाहती है, लेकिन इससे गांवों की हालात पर क्या असर पड़ रहा है, इस ओर किसी का ध्यान नहीं है।

जिस विकास के मॉडल को विकसित और विकासशील देशों ने अपनाया, क्या वाकई में वह सबके लिए मुफीद साबित हुआ है? यह सवाल इसलिए और भी लाज़मी हो जाता है कि भारत जैसे विकासशील देश जिसकी 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर आधारित है को हाइवे के लिए इस्तेमाल करना कितना मुफीद है?

आर्ष क्रान्ति पत्रिका के लिए आर्य लेखक बन्धु अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ भेंजे।

दयानन्द का अर्थ तो..

दयानन्द तुमको नमन, शत-शत बारम्बार ।
अँधियारे को चीर कर, दिखलाया उजियार ।।

जिसने जीवन में लिया, दयानन्द को ढाल ।
पल भर में उसके कटे, सघन अमा के जाल ।।

कदम - कदम पर थी बँधी, पाखण्डों की डोर ।
दयानन्द ने काट तम, जग -हित खींची भोर ।।

कभी धर्म की चांदनी, कभी वेद की धूप ।
दयानन्द का रूप तो, कैसा अदभुत रूप !!

दसों दिशा रोशन हुई, कटे तिमिर के पाश ।
दयानन्द ने क्या रचा, इक सत्यार्थ प्रकाश !!

दयानंद थे गर्जना, आजादी के शंख ।
तेज आंधियों में दिए, उड़ने के सौ पंख ।।

दयानन्द का अर्थ तो, 'भूषण' परमानन्द ।
जिसने समझा मर्म यह, उसे मिला आनन्द ।।

कभी सोचता बैठ मन, अगर न होते आप ।
मानव को मिलती कहां, दया - धर्म की ताप ।।

ऋषिवर ने जग को दिए, पढ़ा वेद के पाठ ।
वरना पढ़ता आज भी, सोलह दूने आठ ।।

फैलाई नव चांदनी, फैलाई नव धूप ।
ऋषिवर को छू-छू हुए, पत्थर पारस रूप ।।

— ✍ भारत भूषण आर्य

सक्रियता : जीवनीशक्ति है और सफलता का आधार भी

स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जीवन के अन्तिम क्षण तक अपने कार्य में सक्रिय रहे। उन्होंने विज्ञान पर विश्व प्रसिद्ध चर्चित पुस्तकें लिखीं। उन्होंने कभी भी उम्र और वक्त को अपने मकसद में आड़े नहीं आने दिया।

एक बार की बात है उन्हें बहुत तेज का बुखार था । जिस उम्र में वे थे ऐसे में बुखार आने पर आमतौर पर लोग कम्बल ओढ़कर आराम करते हैं या अस्पताल में भर्ती हो जाते हैं । लेकिन स्वामी जी को कार्य करने की ऐसी धुन सवार थी कि वे वेदों का अंग्रेजी अनुवाद करने में लगे रहे । उनसे जब आराम करने की बात कही जाती तो बोल पड़ते –यदि बुखार का बहाना बनाकर चारपाई पर जा पड़ूं तो यह मैं अपने साथ इंसाफ नहीं करूंगा। बुखार आने का मतलब है कि शरीर और भी सेहतमंद होने वाला हं, फिर मैं अपने शरीर के साथ क्यों अन्याय करूं । स्वामी जी का सारा जीवन इतना व्यवस्थित था कि कभी आलस्य और प्रमाद के शिकार नहीं हुए। वे आलस्य और प्रमाद को जिन्दगी का सबसे बड़ा दुश्मन मानते थे। आइए, देखते हैं सक्रियता का प्रभाव हमारी जिंदगी को कितना बदल देता है।

जीवनी शक्ति बढ़ती है –– सक्रिय रहने से हमारे अन्दर जीवनीशक्ति का संचार होता है । हमारी इन्द्रियां शक्तिशाली और पावन बनी रहती हैं। एक उत्साह और प्रफुल्ता हर पल हमारे अन्दर बनी रहती है। एक विश्वास और सकारात्मक नज़रिया हमारे मन में हमेशा मौजूद होती है। जिसका सीधा रिश्ता हमारे मकसद और कार्यों से होता है । कभी किसी कार्य या संकल्प में अंतर्द्वंद्व नहीं होता है । ऐसा लगता है हम वह जरूर हासिल कर लेंगे जो चाहते हैं । और बड़ी–सी–बड़ी रुकावटें सहजता से पार हो जाती हैं ।

सेहत के लिए वरदान–– वैज्ञानिक शोधों से यह साबित हो चुका है कि लगातार सक्रिय रहने वाला व्यक्ति आलसी और प्रमादी व्यक्ति से शारीरिक और मानसिक रूप से ज्यादा सेहतमंद होता है । ऐसा इंसान बुढ़ापे की ओर नहीं बल्कि जवानी के भाव में मस्त रहता है । एक जिन्दादिली की मस्ती लगातार बनी रहती है। वैज्ञानिक परीक्षणों से यह भी साबित हो चुका है कि लगातार सक्रिय रहने वाला आराम तलबी में जिन्दगी गुजारने वाले की अपेक्षा दस से बीस साल ज्यादा जीता है । जिन्दगी में एक बैलेंस बना रहता है । बीमारियां और हताशा कभी पांव नहीं धरती, और यदि धरती भी हैं जो जल्दी ही खत्म हो जाती हैं ।

विचारों में संतुलन –– विचारों में यदि संतुलन बनाना है तो हमें हमेशा सक्रिय रहना चाहिए। विचार–क्रांति की बुनियाद यदि इसे कहा जाए तो गलत न होगा । दुनिया में जितनी भी क्रांतियां हुईं हैं सभी सक्रिय–योद्धाओं के जरिए ही हुई हैं। नए–नए विचार तभी आते हैं जब हम हमेशा किसी न किसी काम या चिन्तन में लगे होते हैं। खुद का विकास करना हो या परिवार में सुख–समृद्धि लानी हो अथवा समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने की बात हो, हर व्यक्ति के लिए सक्रिय रहना जरूरी है ।

सक्रियता जिस भी क्षेत्र में होती है उसमें उसकी एक पहचान तो बनती ही है। मौजूदा समाज में नकारात्मक नजरिए वालों की सक्रियता अधिक है इस लिए समाज में अनगिनत समस्याएं कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ गईं हैं। और इसकी जगह पर यदि सकारात्मक नजरिए वालों की सक्रियता बढ़ जाए तो समाज से समस्याएं खत्म होने लगेंगी । और एक दिन ऐसा आएगा कि धरती पर स्वर्गिक माहौल तैयार हो जाएगा । इस लिए महान् लोगों ने कहा है कि धरती पर ईश्वर ने इंसान के रूप में जन्म आप को इस लिए दिया है कि हमेशा सक्रिय रहते हुए धरती से दुखों को खत्म करने के लिए कोशिशें करते रहिए । क्योंकि आप इस धरती के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने इतिहास पुरुष, भू–स्वामी या किसी देश का शासक। क्योंकि किसी एक व्यक्ति से धरती को आनन्दमय और संस्कारवान बनाना असम्भव है ।

सफलता की प्राणवायु–– किसी न कहा है कि असफलता यह बताती है कि सफलता के लिए कोशिश पूरे मन से नहीं की गई है । मतलब, सक्रिय रहने के साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि जिस मकसद को हासिल करना चाहते हैं उसके लिए पूरे मन से कोशिश करें । जिस तरह से जीवन के लिए प्राणवायु की जरूरत हर पल होती है उसी प्रकार से सफलता हासिल करने के लिए सक्रिता की जरूरत होती है । अगर धर्म की भाषा में कहें तो यह

जीवन की कार्य–धर्मिता है । दर्शन की भाषा में यह सफलता प्राप्ति के लिए एक जीवंत–स्पंदन है ।

- **वेद शास्त्रों में यह जीवन–धर्म है**–– वेद शास्त्रों में सक्रियता जीवन का धर्म बताया गया है । वेद में कहा गया है जो आलस्य के कारण सोता रहता है वह मरे के समान है । जो उठकर बैठ जाता है वह एक जीवंत प्राणी बन जाता है । और जो उठकर चलने लगता है वह अमरता के रास्ते पर आगे बढ़ जाता है । इसी प्रकार हमेशा सोते रहने वालों के लिए हर वक्त कलयुग बताया गया है । जो उठकर बैठ गया उसके लिए द्वापर है । जो चलने के लिए तैयार हो गया उसके लिए हर क्षण त्रेता है और जो चल पड़ा उसके लिए हमेशा सतयुग है ।

- **शुभ लाभ मिलता है—** सक्रियता सार्थक और सकारात्मक दिशा में हो तो यह अपने लिए शुभ है ही, परिवार और समाज के लिए भी शुभ होती है । और इस शुभ का जो सकारात्मक परिणाम होता है, वह लाभकारी यानी फायदेमंद होता है । हमारी जिन्दगी में जितने अंश में शुभ का समावेश होता है उतने अंश में हमें अपने आप लाभ मिलता ही है, यह प्रकृति का नियम है । इस लिए हम लगातार सक्रिय रहकर अपने और अपने परिवार तथा समाज का भला कर सकते हैं ।

- **समय का सदुपयोग और कामयाबी––** जिन्दगी में सबसे कोई कीमती चीज है तो वह है समय । गया वक्त फिर लौटकर नहीं आता है । इस लिए उसका हम यदि पूरा सदुपयोग करें तो हम वह हासिल कर सकते हैं जो हासिल करना चाहते हैं । जिन्दगीभर सक्रिय रहकर जिस भी व्यक्ति ने वक्त का पूरा–पूरा इस्तेमाल किया, वह इतिहास के पन्नों में अपनी अमिट छवि अंकित करा गया। कहते है ईश्वर उसकी ही मदद करता है जो खुद अपनी मदद करता है । यानी जो हमेशा पुरुषार्थ करने में लगा रहता है, वह ही सफल होता है ।

- **अनुभव एवं ज्ञान के लिए भी जरूरी** –– लगातार मकसद के साथ अपने कर्म में लगे रहने वाले व्यक्ति को ज़िन्दगी के जितने तजुर्बे होते हैं उतने किसी भी व्यक्ति को नहीं होते हैं। और करत–करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान के मुताबिक भी सक्रिय रहने वाला इंसान ही उस मुकाम पर पहुंच सकता है जो अपने धुन का पक्का हो । दुनिया में जितने भी ज्ञानी हुए हैं सभी पुरुषार्थी थे । पुरुषार्थ ही सभी सफलताओं का आधार है । मतलब, जिन्दगी का पर्याय यदि सक्रियता को माना जाए तो कोई गलत नहीं होगा ।

महर्षि दयानंद द्वारा यजुर्वेद हिंदी भाष्य का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद

प्रथम बार महर्षि दयानंद के वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद आचार्य सतीश आर्य के द्वारा किया जा रहा है। यजुर्वेद का अंग्रेजी अनुवाद लगभग पूरा हो गया है, अभी संशोधन का कार्य प्रगति पर है। आचार्य सतीश जी ऐसे वेदज्ञ और अनुवादक हैं जिन्होंने अपने बल पर वैदिक वांग्मय के उत्थान में अनेक कार्य किए हैं। ज्ञातव्य है विश्व में वेद का अंग्रेजी अनुवाद मैक्स मूलर आदि का पढ़ाया जाता है। आचार्य सतीश आर्य ने महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद किया है। ज्ञातव्य है अभी तक ऐसा कार्य किसी ने नहीं किया था। अंग्रेजी अनुवाद के इस कार्य से विश्व में महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य को समझने का विद्त जनों को अवसर मिलेगा। जो भी विद्वान् आर्य जन महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य के अंग्रेजी अनुवाद पढ़ना –पढ़ाना चाहते हैं वे आचार्य सतीश आर्य के अंग्रेजी अनुवाद का अवलोकल एक बार अवश्य करें। आचार्य सतीश जी वेबसाइट के माध्यम से अंग्रेजी संस्कृत और हिंदी भाषा में वैदिक वांग्मय को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। आइए, हम सभी इनके कार्य का अवलोकन करें और इन्हें प्रोत्साहित करें।

ओ३म्

"इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता"

और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य, प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

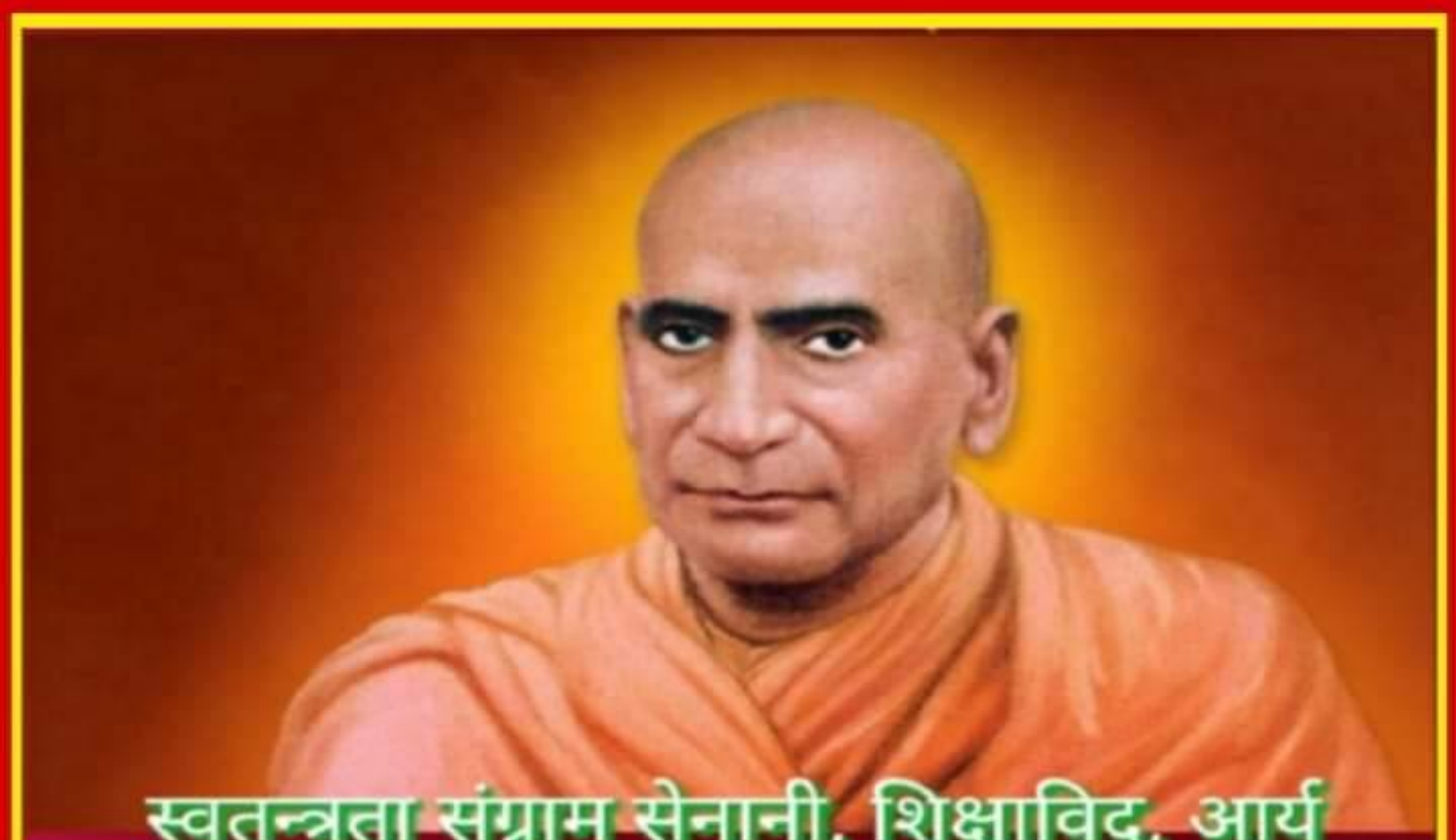

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, शिक्षाविद, आर्य सन्यासी जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं तथा सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। अछूतों-दलितों के "महानतम और सबसे सच्चे हितेषी"

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी

के बलिदान दिवस 23 दिसम्बर (1926) पर

श्रद्धापूर्वक कोटिशः नमन

आर्य लेखक परिषद